अगहन मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 316 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 01 दिसम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

फेसबुक पर बुआ-बबुआ पेज बनने पर हुई कार्रवाई

कन्नौज। फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग के खिलाफ उत्तर प्रदेश में कन्नौज के ठठिया थाना में रिपोर्ट दर्ज है। कोर्ट के आदेश पर दर्ज हुई रिपोर्ट में 49 और लोगों को भी वादी बनाया गया है। यह रिपोर्ट फेसबुक पर बुआ-बबुआ के नाम से पेज बनाकर पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की छवि खराब करने के आरोप में दर्ज हुई है। ठठिया थाना क्षेत्र के सराहटी गांव के रहने वाले अमित कुमार की शिकायत के बाद यह रिपोर्ट दर्ज की गई है। अमित कुमार ने बताया है कि वह समाजवादी विचारधारा से प्रभावित है। समाजवादी पार्टी का समर्थक है। सपा मुखिया अखिलेश यादव में उसकी सियासी आस्था है। उसकी शिकायत है कि फेसबुक पर बुआ-बबुआ के नाम से एक पेज बना हुआ है। उस पेज पर आए दिन सपा मुखिया के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की जाती है।

सीएम योगी ने परीक्षा नियामक प्राधिकारी को किया सस्पेंड

लखनऊ। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा के पेपर लीक मामले में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सख्ती शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री योगी ने लापरवाही बरतने के कारण परीक्षा नियामक सचिव संजय कुमार को निलंबित कर दिया है। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा के पेपर लीक मामले में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्ती शुरू कर दी है।

मुख्यमंत्री योगी ने लापरवाही बरतने के कारण परीक्षा नियामक सचिव संजय कुमार को निलंबित कर दिया है। अब उन्हें बेसिक शिक्षा निदेशक कार्यालय में रिपोर्ट करना होगा। मुख्यमंत्री ने इससे पहले ही साफ कर दिया था कि मामले में सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने पेपर लीक प्रकरण से जुड़े आरोपियों पर रासुका और गैंगस्टर एक्ट के तहत मुकदमे दर्ज कर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए थे। शुरूआती जांच में मिली जानकारी के अनुसार, यूपी टीईटी का पेपर लीक करने वालों में

कुछ संविदा पर रखे गए सरकारी कर्मचारी भी शामिल हैं। वहीं, मामले के तार पुराने नकल माफियाओं से भी जुड़ने की जानकारी सामने आई है। सरकार ने मामले की जांच एसटीएफ को सौंपी है।

एसटीएफ की टीमें लगातार कई जिलों में दबिश दे रही हैं। अब तक अलग-अलग जिलों में करीब 35 लोगों की धरपकड़ की गई है। उनसे पूछताछ भी जारी है। मुख्यमंत्री के निदेर्शानुसार जांच तेजी से की जा रही है। फीसदी पारदर्शी तरीके से पुनः परीक्षा आयोजित करने को कहा था। इस दौरान परीक्षा सभी परीक्षार्थी उम्मीदवारों को यूपी रोडवेज की बसों में निशुल्क यात्रा सुविधा भी प्रदान की जाएगी। सरकार की सख्त हिदायत के बाद पुलिस भी तेजी से कार्रवाई में जुटी है। यूपी टेट की परीक्षा में भाग लेने के लिए आए करीब 20 लाख परीक्षार्थियों के लिए राज्य भर में 2,736 परीक्षा केंद्रों का निर्धारण किया गया था।

योगी सरकार दिसंबर के दूसरे सप्ताह से बांटना शुरू करेगी फ्री स्मार्टफोन और टैबलेट

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ युवाओं को तकनीकी रूप से अपग्रेड करने के लिए जल्द बड़ी सौगात देने वाले हैं। उम्मीद है कि दिसंबर के दूसरे सप्ताह से निशुल्क स्मार्टफोन और टैबलेट का वितरण शुरू हो जाएगा। इसके लिए डीजी शक्ति नाम से पोर्टल बनाया गया है, जिसे जल्द ही सीएम योगी लांच करेंगे। इसी पोर्टल के माध्यम से स्मार्टफोन और टैबलेट का वितरण और छात्रों को भविष्य में पढ़ाई के लिए कंटेंट दिया जाएगा। इसके अलावा स्मार्टफोन और टैबलेट के बारे में समय-समय पर छात्रों को उनके मोबाइल नंबर और मेल आईडी पर सूचना दी जाएगी। सरकार की ओर से छात्रों को फ्री स्मार्टफोन और टैबलेट देने के लिए राहत दी गई है और उन्हें कहीं भी पंजीकरण कराने की जरूरत नहीं है। पंजीकरण से लेकर स्मार्टफोन और टैबलेट वितरण तक पूरी व्यवस्था निशुल्क है। छात्रों का डेटा कॉलेजों की ओर से यूनिवर्सिटी को दिया जा रहा है और यूनिवर्सिटी के माध्यम से ही छात्रों के डेटा फीडिंग हो रही है। सोमवार तक करीब 27 लाख छात्रों का डेटा पोर्टल पर अपलोड कर दिया गया है। शेष अन्य छात्रों के डेटा फीडिंग की भी प्रक्रिया तेजी से चल रही है। सरकार की ओर से स्मार्टफोन और टैबलेट की खरीद के लिए जेम पोर्टल पर अब तक का सबसे बड़ा टेंडर जारी किया गया है।

उत्तर प्रदेश की मिलों में अब चीनी कम, एथेनॉल ज्यादा बनेगा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में अब चीनी मिलों को चीनी नहीं बल्कि एथेनॉल ज्यादा रास आ रहा है। चालू पेराई सत्र में गोंडा में मेजापुर चीनी मिल में गन्ने के रस से सीधे एथेनॉल बनाने का प्लांट चालू होने वाला है। बलरामपुर चीनी मिल समूह का यह प्लांट एशिया का सबसे बड़ा प्लांट है। इस मिल में करीब 300 करोड़ रुपये का चीनी का उत्पादन होता था। इसके अलावा कई निजी व सरकारी क्षेत्र की मिलों ने हैवी शीरे से चीनी के बजाए एथेनॉल ही बनाने की ठानी है। उत्तर प्रदेश चीनी निगम की गोरखपुर स्थित पिपराइच चीनी मिल में भी आने वाले दिनों में सीधे गन्ने के रस से एथेनॉल ही बनाया जाएगा। गन्ना विकास व चीनी उद्योग विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय आर भूसरेड्डी ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में पिछले पेराई सत्र के मुकाबले इस बार करीब 12 प्रतिशत चीनी कम बनेगी। इस तरह से इस बार 120 लाख मीलियन टन के वार्षिक उत्पादन के मुकाबले करीब 105 लाख मीलियन टन चीनी का उत्पादन होने के आसार हैं जबकि इस बार एथेनॉल का 160 करोड़ लीटर उत्पादन होने का लक्ष्य तय किया गया है। भूसरेड्डी ने बताया कि यूपी सर्वाधिक एथेनॉल उत्पादन करने वाला राज्य है। यहां एथेनॉल बने का करीब साठ फीसदी हिस्सा अपने राज्य में ही पेट्रोल में मिलाकर हरित ईंधन के तौर पर प्रयुक्त किया जाता है। अभी पेट्रोल में करीब 10 प्रतिशत एथेनॉल मिलाया जाता है, उत्तर प्रदेश सरकार ने इस बढ़ाकर 14 प्रतिशत किए जाने की मांग की है।

किसान, नौजवान व गरीब महंगाई की मार से सभी टूट गए : अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा ने जनता को बुरी तरह निराश किया है। उसकी नीतियों और कार्यप्रणाली से उत्तर प्रदेश की जनता असंतुष्ट है। किसान,

नौजवान, गरीब महंगाई की मार से टूट गए हैं। इसलिए जनता अब भाजपा से मुक्ति चाहती है। उसको भरोसा है कि समाजवादी सरकार बनने पर ही भला होगा। अखिलेश ने मंगलवार को पार्टी कार्यालय लखनऊ में डॉ. राममनोहर लोहिया सभागार में एकत्र कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा ने देश की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने के साथ नोटबंदी और जीएसटी से व्यापार और काम धंधा चौपट कर दिया है। विकास अवरुद्ध है। लोगों को बहकाने के लिए भाजपा सरकार लोकार्पण और शिलान्यास का नाटक कर रही है। उन्होंने कहा कि सच तो यह है कि भाजपा ने अब तक एक ही काम किया है वह है समाजवादी पार्टी के विरुद्ध साजिशें रचने का। भाजपा का काम झूठे आरोपों का प्रचार-प्रसार करना है। राजनीति को अभद्र भाषा और असंगत कार्य व्यवहार से भाजपा ने बुरी तरह प्रदूषित किया है।

मुसलमानों का उत्पीड़न कर रही भाजपा सरकार : मायावती

लखनऊ। एआईएमआईएम प्रमुख असद्दुीन ओवैसी यूपी में मुसलमानों की हालत को लेकर लगातार हमलावर हैं। अब बसपा सुप्रीमो मायावती ने मुसलमानों को लेकर योगी सरकार पर हमला किया है। मायावती ने भाजपा सरकार पर मुसलमानों को फर्जी मुकदमो में फंसाकर उनका उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। मायावती ने मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मौजूदा भाजपा सरकार में धार्मिक अल्पसंख्यक खासकर मुस्लिम समाज के लोग हर मामले में व हर स्तर पर काफी ज्यादा दुःखी नजर आते हैं। यूपी की भाजपा सरकार में अब इनकी तरक्की लगभग बन्द सी हो गई है। ज्यादातर फर्जी मुकदमों में फंसाकर इनका उत्पीड़न किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि नए-नए नियमों कानूनों से मुसलमानो में दहशत पैदा की जा रही है। साफ तौर पर भाजपा इनके प्रति सौतेला रवैया अपना रही है। बसपा की सरकारों में इनकी तरक्की के साथ-साथ इनके जान-माल की भी पूरी-पूरी इफाजत की गई। इसके साथ जाट समाज के लोगों की भी तरक्की व खुशहाली का पूरा-पूरा

ध्यान बसपा की सरकारों में रखा गया। मायावती ने कहा कि बसपा की सरकार बनने पर इन सभी वर्गों के हित व कल्याण का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाएगा और इन सबके बारे में प्रदेश में पार्टी के ओबीसी, जाट एवं मुस्लिम समाज के पदाधिकारी अपने-अपने समाज की छोटी-छोटी बैठकों के जरिये काफी कुछ बता रहे हैं जिसके कारण इन वर्गों के लोग बड़ी संख्या में पार्टी से जुड़ रहे हैं। बसपा अध्यक्ष ने फिर दोहराया कि उनकी पार्टी यूपी विधानसभा का अगला आमचुनाव सभी 403 सीटों पर अकेले अपने बूते पर ही पूरी तैयारी के साथ लड़ेगी और उन्हें उम्मीद है कि 2007 की तरह ही पूर्ण बहुमत की सरकार यहाँ फिर से जरूर बनाएगी। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से लम्बे समय तक केन्द्र में रही कांग्रेस की सरकार के समय में मण्डल कमीशन की रिपोर्ट आने के बावजूद इसे लागू नहीं किया गया। इसे बसपा ने अथक प्रयासों से केन्द्र मे रही वीपी सिंह सरकार से लागू करवाया था और तब फिर जाकर देश में ओबीसी वर्गों के लोगों को दलितों व आदिवासियों की तरह, इन्हें भी काफी कुछ यह आरक्षण की सुविधा मिली है।

मायावती ने कहा कि केन्द्र व राज्यों की भी जातिवादी सरकारें इनके आरक्षण को आए दिन नये-नये नियम व कानून आदि बनाकर तथा कोर्ट-कचेहरी का भी सहारा लेकर प्रभावहीन बनाने में लगी है। यही हाल यहां इन वर्गों का यूपी में भी देखने के लिए मिल रहा है। मायावती ने कहा कि देश में दलितों आदिवासियों व अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों के साथ हर स्तर पर हो रही जुल्म-ज्यादती भी अभी तक पूरे तौर से बन्द नहीं हुई है। इसके अलावा, ओबीसी समाज की केन्द्र की सरकार से जो इनकी अलग से जातिगत जनगणना कराने की मांग चल रही है, उससे बसपा पूरे तौर से सहमत है, उसे भी अब केन्द्र सरकार द्वारा जातिवादी मानसिकता के तहत चलकर नजर अन्दाज किया जा रहा है। सपा द्वारा छोटे दलों से गठबंधन करके चुनाव लड़ने की तैयारी और भाजपा की तरह जीत का दावा करने के सम्बंध में पूछे गए सवाल के जवाब में मायावती ने कहा कि यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा कि किस पार्टी में कितना है दम।

बिहार विधानसभा परिसर में शराबः डीजीपी और चीफ सेक्रेटरी करेंगे जांच, तेजस्वी पर नीतीश का पलटवार

पटना। बिहार विधानसभा परिसर में शराब की बोतल मिलने के मामले को नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने सदन के बाहर उठाने के बाद कार्यवाही के दौरान भी लगातार उठाया। इसे लेकर पहले हंगामा हुआ फिर विधानसभा स्पीकर के आदेश पर नीतीश कुमार ने डीजीपी और चीफ सेक्रेटरी से मामले की जांच की बात कही। बाद में मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव त्रिपुरारी शरण और डीजीपी एसके सिंघल को विधान परिषद के अपने चैंबर में बुलाया और पूरे मामले की जांच कराने का निर्देश दिया। विधानसभा में तेजस्वी के मामला उठाने के दौरान नीतीश कुमार खड़े हुए और शराब की बोतल मिलने पर गहरी नाराजगी जाहिर की। नीतीश ने कहा कि विधानसभा कैम्पस में शराब की बोतल मिलना छोटी बात नहीं है। इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

ओमिक्रॉन इफेक्ट से दोगुना हुआ किराया

कई एयरलाइंस ने 100% तक बढ़ाए दाम, नई गाइडलाइंस से एयरपोर्ट पर 6 घंटे तक करना पड़ सकता है इंतजार

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन का असर ट्रैवल इंडस्ट्री पर भी दिखने लगा है। एयरलाइन कंपनियों ने कई इंटरनेशनल रूट पर हवाई किराया बढ़ा दिया है।

भारत से अमेरिका, ब्रिटेन, यूएई और कनाडा जैसे देशों के लिए हवाई किराए दोगुने तक हो गए हैं। इंटरनेशनल डेस्टिनेशन की हवाई यात्रा करने वालों की परेशानियां यहीं खत्म नहीं हो रही हैं। ओमिक्रॉन से बचाव के लिए केंद्र सरकार की तरफ से लागू नई गाइडलाइन भी मंगलवार आधी रात से लागू हो रही है। इन गाइडलाइंस में तय की गई प्रोसेस के कारण यात्रियों को एयरपोर्ट पर भी 6 घंटों तक इंतजार करना पड़ सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जिन देशों में ओमिक्रॉन पाया गया है, वहां से आने वाले हजारों यात्रियों को दिल्ली एयरपोर्ट पर 6 घंटे का इंतजार करना पड़ सकता है। दरअसल, ओमिक्रॉन के खतरे को देखते हुए केंद्र सरकार ने नई गाइडलाइन जारी की है, जो 1 दिसंबर मिडनाइट से प्रभावी हो जाएगी। नई गाइडलाइन में 14 से ज्यादा देशों में जहां ओमिक्रॉन के मामले पाए गए हैं, उन देशों से आने वाले यात्रियों की एयरपोर्ट पर फ्छ-ढउफ टेस्टिंग अनिवार्य कर दी गई है। इन देशों से आने वाले यात्री एयरपोर्ट पर किए गए कोविड टेस्ट की निगेटिव रिपोर्ट आने के बाद ही बाहर निकल सकेंगे। एयरपोर्ट पर किए गए फ्छ-ढउफ टेस्ट का रिजल्ट आने में 4 से 6 घंटे का समय लगेगा। टेस्ट का रिजतय नहीं है कि एयरपोर्ट पर कितने टेस्टिंग काउंटर लगाए जाएंगे।

इन देशों से आने वाले यात्रियों के लिए टेस्टिंग अनिवार्य

सरकार की नई गाइडलाइन आज से लागू

नए वैरिएंट को लेकर बिहार में सतर्कता, कोविड नियमों का पालन नहीं करने पर बंद होंगी मंडी व दुकानें

पटना। कोविड की रोकथाम के लिए बनाए गए नियमों का पालन नहीं होने पर मंडी और दुकानों को अस्थाई तौर पर बंद कर दिया जाएगा। सरकार ने भीड़ भाड़ वाले स्थान, जिसमें सब्जी मंडी और बाजार आदि शामिल हैं, वहां कोरोना की रोकथाम को लेकर जिला प्रशासन को यह अधिकार दिया गया है। ऐसे स्थानों पर यदि कोरोना प्रोटोकॉल का उल्लंघन होता है तो जिला प्रशासन उन्हें अस्थाई तौर पर बंद करने के साथ अन्य सख्त कार्रवाई भी कर सकता है। आपदा प्रबंधन समूह (सीएमजी) की बैठक में लिए गए फैसलों के बाद गृह विभाग द्वारा अनलॉक-10 के दिशा-निर्देश मंगलवार को जारी कर दिए गए। यह 1-15 दिसम्बर तक के लिए प्रभावी होगा। हालांकि अनलॉक-9 में जो दिशा-निर्देश दिए गए उन्हें भी इसमें लागू रखा गया है। कोविड के नए वेरिएंट ओमीक्रॉन को देखते हुए कुछ एहतियात बरतने के भी निर्देश अनलॉक-10 में दिए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग को हवाई जहाज से आनेवाले यात्रियों की निश्चित रूप से कोरोना जांच करने को कहा गया है। 72 घंटे की आरटीपीसीआर की निगेटिव रिपोर्ट जिसके पास होगी, उन्हें इस जांच से छूट दी गई है। वहीं, जिन देशों में ओमीक्रोन वेरिएंट के मरीज पाए गए हैं, वहां से आनेवाले यात्रियों की विशिष्ट रूप से जांच कराई जाएगी। साथ ही, वैसे देशों से आनेवाले यात्रियों को क्वारंटाइन करने पर भी विचार किया जा सकता है। गृह विभाग द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों में स्वास्थ्य विभाग को वैसे राज्यों, जहां कोविड के ज्यादा मामले या डेल्टा प्लस वैरिएंट के मामले आ रहे हैं, वहां से आनेवाले यात्रियों की रैपिड एंटीजन टेस्ट कराई जाएगी।

खबर संक्षेप

निरोगी काया के लिए संयमित दिनचर्या जरूरी

बाबूगंज। निरोगी काया के लिए सभी के लिए जरूरी है।उक्त बाते हरि चैतन्य टीकरमाफी ने रुदापुर में अस्पताल के लोकार्पण के अवसर पर कही। उन्होंने कहा सभी व्यक्तियों की दिनचर्या सुबह से लेकर शाम तक अनियमित होती जा रही है। खान-पान से लेकर रात सोने तक की दिनचर्या में परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन में कई प्रकार की व्याधियां उत्पन्न हो रही। जिसके लिए सभी को अपनी दिनचर्या में सुधार, संतुलित आहार करके स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल ने कहा शिक्षा के साथ सभी को अनिवार्य रूप से स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण जानकारी होना जरूरी है। स्वयं के स्वच्छता, आहार एवं विचार से ही मानव जीवन स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहकर लंबी आयु जी सकताहै।

अस्पताल के आयोजिका डॉ रिचा तिवारी ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

धान की तत्काल खरीद हो नहीं तो अधिकारियों के आवास पर होगा प्रदर्शन : रेवती रमण

अखंड भारत संदेश

करछना आदर्श विधानसभा सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध-रेवती रमण सिंहकरछना में 5.98 करोड़ सांसद निधि से 50 सड़क का लोकार्पण

पचास सडकों का लोकार्पण करते हुए कुवर रेवती रमण सिंह।

करछना। राज्य सभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने करछना विधानसभा में 5.98 करोड़ से 50सड़क का लोकार्पण करते हुए कहा कि करछना को आदर्श विधानसभा के रूप में विकसित करना ही हमारी पहली प्राथमिकता रही हैं जो लगभग पूरा हुआ यहाँ सड़कों का जाल बिछाया गया जनपद में सबसे ज्यादा सरकारी टयूबवेल भी करछना में है बिजली लगभग सभी मजरे पुरवे में हैं। यहां लगभग सभी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं।सांसद ने कहा कि करछना विधानसभा में ही इंट्रीगेटेट टाउनशिप में विश्वविधालय की तरह एक मेदांता या अपोलो जैसा विश्वस्तरीय अस्पताल अखिलेश सरकार बनने के बाद खुलवाया जायेगा जिससें प्रयागराज सहित मध्यप्रदेश के क्षेत्रवासियों को लाभ होगा साथ में कचरी में अधिग्रहित जमीन पर स्थानीय लोगों के रोजगार के लिए फैक्टरी का निर्माण कराया जायेगा और यह तभी सम्भव है जब 2022 में अखिलेश सरकार बनें क्योंकि भाजपा को गरीबों के दुखदर्द से कुछ लेना देना नहीं है। सांसद से किसानों ने शिकायत किया कि धान की सरकारी खरीद नहीं हो रही हैं जिसपर सांसद ने अधिकारियों से वार्ता कर चेताया कि धान की खरीद तत्काल चालू किया जाय नहीं तो इस बार तहसील की जगह अधिकारियों का आवास घेरने का काम करेंगे किसान। सपा पूर्व प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि गरीब विरोधी भाजपा की योगी-मोदी सरकार की मंशा जाहिर हो गई कल लोकसभा में कहा कि मार्च तक ही गरीबों को फ्री का अनाज मिलेगा इसका मतलब सिर्फ चुनाव के लिए ही गरीबों को अनाज दिया जा रहा है जैसे ही चुनाव खत्म अनाज बंद तब गरीब क्या रईस हो जायेंगे भाजपा भोली भाली जनता को सिर्फ बेकूफ बनाने का कार्य करती हैं।प्रवक्ता ने कहा कि भाजपा सरकार की सारी योजना फेल हैं शौचालय व उज्जवला गैस योजना 80% अनउपयोग में है।लोकार्पण में करछना प्रमुख कमलेश द्विवेदी,राजेश्वर पाण्डेय, सनिल अहमद, रविश तिवारी, शिव गणेश पटेल प्रधान हथसरा, पप्पू इसराइल, मिश्री लाल केसरी, अभिताभ पाण्डेय, सर्वेश मिश्रा, अभिषेक गौतम, वीरभान सिंह, बब्लू पाण्डेय,दिनेश पटेल, कबुतर पटेल,संजय मौर्या,महादेव चमार,जिलेदार भारतीय, शेषबहादुर पटेल, राधेश्याम पाण्डेय, श्रीकांत यादव आदि रहे।

न्यूज झरोखा

नैनो तकनीक किसानों के लिए हितकर : जितेन्द्र

इफको फूलपुर पहुंचे आल इंडिया आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व इफको मार्केटिंग के चेयरमैन

फूलपुर। इफको के प्रबंध निदेशक डा0 उदय शंकर अवस्थी द्वारा आ?विष्कारित नैनो यूरिया के बाद अब तरत नैनो डीएपी, पोटाश जिंक किसानों के लिए वरदान साबित होगी। इसके प्रयोग से जहां किसानों को खेती में अच्छी आय होगी वहीं लागत भी कम आएगी। यह बातें इफको फूलपुर इकाई पहुंचे इफको आल इंडिया आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेन्द्र तिवारी ने उपस्थित लोगो को सम्बो?धित करते हुए मंगलवार को कही। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से क्षीण हो रही धरती मां की उर्वरा शक्ति को बचाने के लिए इफको ने यह बड़ा कदम उठाते हुए किसानों को एक बड़ा तोहफा दिया है। नैनो यूरिया और डीएपी के उपयोग से जहां खेत की उर्वरा शक्ति बचेगी वहीं किसानों की आर्थिक बचत होगी। इस मौके पर इफको इम्प्लाइज यूनियन के अध्यक्ष पंकज पांडेय, महामंत्री विनय कुमार यादव, कार्यकारिणी के मनोज ?श्रीवास्तव, इफको अधिकारी संघ के अध्यक्ष संजय मिश्र, महामंत्री स्वयं प्रकाश के अलावा इफको अधिकारी एवं कर्मचारियों ने दिल्ली से आए जितेन्द्र तिवारी एवं इफको मार्केटिंग के चेयरमैन बृजेश यादव को सम्मानित भी किया।

प्रधान हथसरा गांव में वैकशिनेसन की दूसरी डोज पर दिया जोर

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत हथसरा में प्रधान शिव गणेश पटेल ने गांव में कोविड 19 के बचाव हेतु कराए गए वैक्सीनेशन के अंतर्गत लोगों को इस महामारी बचाव के लिए गांव में सभी नागरिकों एवं महिलाओं को वैक्सीनेशन की दूसरी डोज लगवाने के लिए कैंप लगाकर प्रेरित किया उस दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ने गांव में बड़ी संख्या में लोगों को दूसरी डोज वैक्सीनेशन डोज का टीका करण किया, जिससे महिलाओं की संख्या बढ़-चढ़कर भाग लिया । इस मौके पर प्रधान शिव गणेश पटेल, सहायक शिव प्रसाद पटेल, सफाई कर्मी घनश्याम, के अलावा स्वास्थ्यटीम में दिव्य का योगदान सराहनीय रहा है ।

बनवासी समाज की बिटिया का कराया विवाह

जंघई। नेदुला निवासी समाजसेवी आदर्श पाठक के द्वारा शेरपुर नेदुला के गरीब परिवार के रमई बनवासी की बिटिया की शादी सुजानगंज मन्दिर गौरीशंकर मन्दिर प्रांगण में आर्थिक एवं तन, मन, धन से सहयोग करके शादी सम्पन कराया आदर्श के इस नेक पुनीत कार्य की सभी ने तारीफ किया है इस अवसर पर बबलू मिश्रा, प्रधान मास्टर मिश्रा जो करीब 20 वर्षों से प्रधान रहे एवं आदर्श के कई भांजे इस पुनीत कार्य में उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय प्रधान संघ ने बीडीओ को सौपा मांगपत्र

अखंड भारत संदेश

ज्ञापन सौंपते प्रधान संघ कोरांव के ग्राम प्रधान

कोरांव। अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संघ कोरांव प्रयागराज ने खंड विकास अधिकारी कोरांव मुकेश कुमार सिंह को 8 सूत्रीय ज्ञापन देकर पंचायती राज व्यवस्था में निहित और प्रद्दत अधिकारों के हनन को लेकर कुल 8 सूत्री मांग पत्र सौंपा। जिसमें मुख्य रुप से प्रधान संघ के ब्लाक अध्यक्ष रामानुज यादव, एवं प्रधान अल्हवा शहजादे सहित कई ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधान आदि मौजूद रहे,। और कार्यवाही किए जाने की मांग की। बता दें कि विकासखंड कोरांव के ग्राम प्रधानों अथवा भूमि प्रबंधन समिति के चेयरमैनो की राजस्व एवं तहसील , थाना , पुलिस आदि द्वारा किए जा रहे शोषण पर नाराजगी प्रधान संघ ने जताई है। इस विषय में 30 नवंबर 2021 को संगठन ने पंचायती राज विभाग के प्रमुख सचिव लखनऊ तथा जिलाधिकारी प्रयागराज को संबोधित खंड विकास अधिकारी कोरांव के माध्यम से आठ सूत्रीय मांग पत्र सौंपा गया और उल्लिखित बिंदुओं पर सक्षम अधिकारियों द्वारा ध्यान आकृष्ट किए जाने तथा अधिकारों का दुरुपयोग किए जाने पर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की । प्रधानों का आरोप है कि ग्राम पंचायतों में सार्वजनिक जमीनों भू अतिचारियों द्वारा कब्जा किए जाने, उचित दर विक्रेताओं द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली में हेराफेरी किए जाने आदि शिकायतें तहसील एवं आपूर्ति विभाग तथा राजस्व एवं पुलिस विभाग से की जाती हैं तो समुचित सहयोग इन सभी विभागों के द्वारा प्रदान नहीं किया जाता है । जिस कारण गावों में सार्वजनिक जमीनों का दोहन तथा आपूर्ति व्यवस्था सरकार की मंशा के अनुरूप नहीं चल पा रही है। जिससे लाभार्थियों को सही व उचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। इस बाबत निराकरण को लेकर ग्राम प्रधानों ने शासन से यह मांग की है कि ग्राम प्रधानों को जो पंचायतीराज अधिनियम में निहित प्रदत्त अधिकार है उसमें किसी अन्य विभाग के अधिकारी द्वारा हनन न किया जाए बल्कि शिकायत के सापेक्ष दोषियों के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जाए। कई ग्राम प्रधानों ने इस आशय की शिकायत की है कि उचित दर विक्रेताओं द्वारा अनियमितता बरते जाने पर जब उसकी लिखित शिकायत उप जिलाधिकारी और आपूर्ति विभाग से की जाती है तो वह ग्राम प्रधानों के ऊपर नाराजगी जताते हुए उचित दर विक्रेताओं को संरक्षण देने का कार्य करते हैं। जिसका जीता जागता उदाहरण ग्राम पंचायत कोलसरा का कोटेदार है , जिसके विरुद्ध कार्यवाही अंततोगत्वा डीएम के हस्तक्षेप से उप जिलाधिकारी कोरांव को दुकान का निलंबन करना पड़ा, और इसी तरह उचित दर विक्रेता अल्हवा द्वारा भ्रष्टाचार किए जाने पर उप जिला अधिकारी कोरांव के द्वारा आरोप पत्र जारी किया गया , फिर भी तहसील और आपूर्ति विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत के कारण उसे बचाने का भरसक प्रयास निरंतर जारी है । प्रधान ने प्रमुख सचिव खाद्य एवम आपूर्ति लखनऊ से लिखित शिकायत भी कर दी। फिलहाल उक्त अब्यवस्थाओं को ले कर ग्राम प्रधानों में रोष व्याप्त है। और मांगें पूरी न होने पर आंदोलनात्मक कदम उठाने और लखनऊ प्रमुख सचिव तथा मुख्य मंत्री से मिल कर कार्यवाही किए जाने की बात कही। खंडविकास अधिकारी ने मांग पत्र को जिलाधिकारी और संबंधित अफसरों के यहां उचित अग्रिम कार्यवाही किए जाने की संघ को तसल्ली दी।

पुलिस के हत्थे चढे भैस चोर,बम के साथ दो को भेजा जेल

करछना। इन दिनो चलाये जा रहे धर पकड अभियान के चहत मंगलवार को मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने दो भैस चोर को डीहा के समीप से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया चोरो के पास से 6 जिंदा बम भी बरामद हुआ।डीहा गाव के पास मैजिक से दो भैस लादकर जा रहे थे जिसपर पुलिस को सूचना मिली की चोरी की भैस के साथ चोर पचदेवरा की ओर आ रहे है पुलिस ने घेराबदी कर मैजिक को रोक लिया पूछताछ करने पर चोरो द्वारा कोई जबाब न दिए जाने पर उन्हे पुलिस थाने ले आई और कडीई से पूछताछ करने पर चोरो ने बताया कि भैस चोरी कर बेचने के लिए जा रहे थे उनके पास से 6 जिदा देशी बम भी बरामद हुआ है।पकडे गये आरोपियो मे बलवन्त भारतीया पुत्र महानन्द भारतीया और राजू यादव उर्फ विपुल कुमार यादव पुत्र नन्दलाल यादव निवासी जमुनीपुर थाना सराइनायत को पशु क्रूरता अधिनियम सहित कई सगीन धाराओ मे मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया।गिरफ्तारी टीम मे प्रमुख रूप से एसआई धीरेन्द्र कुमार सिह,आन्नद कुमार सिह अखिलेश यादव,एसओजी टीम के सतोष कुमार सिह,यशवन्त राठौर धर्मेन्द्र यादव,अनिल सिह शक्ति सिह व सिद्धेश्वर पाण्डेय।

अमृत महोत्सवः राजा कमलाकर के बच्चों ने निकाली प्रभातफेरी

प्रभातफेरी पुरानी बाजार, रेलवे फाटक, सदर बाजार, राम भवन चौराहा होते हुए पुनः कॉलेज में समाप्त हुई

अखंड भारत संदेश

राजा कमलाकर के विद्यार्थी प्रभात फेरी निकालते।

शंकरगढ़। स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ पर अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत राजा कमलाकर इंटर कालेज बच्चों ने प्रभात फेरी निकाली। कालेज से निकली प्रभातफेरी पुरानी बाजार, रेलवे फाटक, सदर बाजार, राम भवन चौराहा होते हुए पुनः कॉलेज में समाप्त हुई।

प्रभात फेरी में भारत माता की जय का भी उद्घोष किया गया और देश के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले भारत मां के अमर सपूतों के बलिदान को याद किया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ के विभिन्न रास्तों से निकली प्रभात फेरी का जगह जगह स्वागत किया गया। कस्बावासियों ने पुष्पवर्षा की। स्थानीय लोगों ने भी प्रभातफेरी में शामिल होकर देश के प्रति प्रेम प्रकट किया। शंकरगढ़ के राजा कमलाकर इंटर कॉलेज की प्रभातफेरी की अगुवाई प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खंड कार्यवाह नरेंद्र कुमार गुप्ता, खंड सेवा प्रमुख प्रेम चंद केसरवानी,जिला कोषाध्यक्ष अनूप केसरवानी ने की। इस रैली में सरस्वती शिशु मंदिर, शंकरगढ़ के भी बच्चे शामिल हुए। इस मौके पर प्रधानाचार्य रामानुज जी,मूलचंद गुप्ता, अनूप केसरवानी, सुजीत केसरवानी, वरिष्ठ समाजसेवी रामखेलावन गुप्ता सहित सैकड़ों लोग शामिल हुए।

जोताई का पैसा मांगने गये युवक के साथ की मारपीट

करछना। क्षेत्र के देहली भगेसर गाव मे सोमवार शाम को खेत की जुताई का पैसा मांगने गये हरिशकर यादव ने शिव बहादुर यादव के घर गये और जुताई क पैसा मागा तो कहासुनी होने लगी किसी तरह मामला शात हुआ मंगलवार सुबह पुनः जुताई का पैसा मागने गये तो शिव बहादुर यादव,योगेश,कौश ने गाली देते हुए उसकी पिटाई कर दी। सूचना पाकर मौके पर पहुची पुलिस ने दोनो पक्षो को थाने लाई जहा शिव बहादुर पक्ष के लोगो को छोड दिया जबकि एक पक्ष को पुलिस थाने मे बैठाये रखा।

स्कूल रेडिनेस प्रशिक्षण मे जुटे प्रतिभागी

करछना। ब्लॉक संसाधन केंद्र करछना के सभागार में स्कूल रेडिनेस प्रशिक्षण के प्रथम एवम द्वितीय बैच का प्रशिक्षण का समापन मगलवार को खण्ड शिक्षा अधिकारी करछना संतोष कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवम मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण के दौरान बच्चो को रूचिकर ढग से शिक्षा देने और उन्हे शिक्षा से जोडे रखने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरा बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान क्विज भी हुई । उक्त प्रषिक्षण में सभी संदर्भदाता के रुप में सुनीता वर्मा, मोनिका द्विवेदी, रमेंद्र कुमार सक्सेना, वत्सला मिश्रा, मीनू त्रिपाठी, पूजा यादव, अमित कुमार शुक्ल एवम् रोशन लाल ने प्रशिक्षण दिया।

संत रविदास शिक्षा सहायता योजना के तहत विधायक ने वितरित किया साइकिल

अखंड भारत संदेश

छात्र छात्राओं को साइकिल का वितरण करतीं मेजा विधायक नीलम करवरिया।

मेजा रोड। मेजा विधानसभा क्षेत्र के विकास खंड उरुवा प्रांगण में श्रम विभाग की ओर से संत रविदास शिक्षा सहायता योजना के तहत मंगलवार को छात्र-छात्राओं को साइकिल वितरित किया गया। मुख्य अतिथि मेजा विधायक नीलम करवरिया और विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख आरती गौतम रहीं। अध्यक्षता श्रम विभाग के असिस्टेंट कमिश्नर लालाराम वर्मा ने की। ब्लॉक प्रमुख आरती गौतम ने पूर्व ब्लॉक प्रमुख रामस्वरूप की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। विधायक मेजा नीलम करवरिया तथा ब्लॉक प्रमुख आरती गौतम ने संयुक्त रूप से छात्र-छात्राओं को साइकिल वितरण किया। साइकिल पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल गए। कार्यक्रम में 319 छात्र-छात्राओं को साइकिल दी गई। मेजा विधायक नीलम करवरिया ने कहा कि योजनाओं का लाभ दिलाने के नाम पर कुछ लोग रुपये लेकर जनता को गुमराह रहे हैं, ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। ब्लाक प्रमुख उरुवा आरती गौतम ने कहा कि जो लोग गांव-गांव जाकर लोगों से 500-700 रुपये लेकर फार्म भरवा रहे हैं उनपर कड़ी कार्रवाई होगी। श्रम विभाग के असिस्टेंट कमिश्नर लालाराम वर्मा ने कहा कि लोग किसी दलाल के चक्कर में न पड़ें, स्वयं सीएससी में ऑनलाइन फार्म भरें। इस मौके पर एडीओ कोआपरेटिव कामराज जायसवाल, एडीओ समाज कल्याण सुशांत पांडेय, प्रमुख प्रतिनिधि भोला गौतम, प्रधान संघ अध्यक्ष उरुवा राजेश द्विवेदी, विजयकांत मिश्र, श्यामराज यादव, राहुल द्विवेदी, विनय कांत शुक्ला, धीरज दुबे, सुभाष मिश्र पयासी, राकेश केसरवानी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

उग्रसेनपुर में निकाली गयी मतदाता जागरूकता रैली

मतदाता जागरूकता रैली निकालते

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। विकास खण्ड अंतर्गत उग्रसेनपुर बाजार में स्थित जिला पंचायत इंटर कॉलेज के बच्चो ने प्रतापपुर विधानसभा के मास्टर ट्रेनर शिक्षक राजेंद्र प्रसाद यादव के नेतृत्व में मंगलवार कॉलेज परिसर से होते हुए उग्रसेनपुर बाजार तक मतदाता जागरूकता रैली निकाल कर लोगो को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और चुनाव में शत प्रतिशत सहभागिता के लिए जागरूक किया। इस मौके पर मास्टर ट्रेनर राजेंद्र प्रसाद यादव ने कहा कि स्वस्थ लोकतंत्र के लिए शत- प्रतिशत मतदान जरूरी है, चाहे आम चुनाव हो या विधानसभा,निकाय या पंचायत चुनाव। प्रधानाचार्य महेंद्र प्रताप सिंह यादव ने कहा कि 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके प्रत्येक नागरिक को मतदाता सूची में नाम दर्ज करा कर लोकतंत्र के उत्सव में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चहिए।इस मौके पर शिक्षक राजेंद्र प्रसाद यादव,दीपक यादव, योगेंद्र पांडेय, सुरेश आलोक यादव, सुभाष, अरबिंद यादव राजभान बिंद सहित विद्यालय के छात्र-छात्राएं सम्मलित रहे।

गाजे बाजे के साथ बच्चो ने निकाली जागरूकता रैली

करछना। क्षेत्र के रामपुर स्थित बृजमंगल सिंह इंटर कॉलेज के बच्चों ने मंगलवार को मतदाता जागरूकता रैली निकालकर सभी को मतदान के प्रति जागरूक किया। इसके पूर्व प्रार्थना सभा स्थल पर सभी बच्चों को मतदान जागरूकता का संकल्प दिला रहे प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने कहा कि मतदान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है एक स्वस्थ देश, स्वस्थ लोकतंत्र और स्वस्थ सरकार के लिए के लिए अधिक से अधिक मतदान जरूरी है। मतदान एक यज्ञ के समान है इसके प्रति बच्चे समाज के लोग को भी जागरूक करें।प्रवक्ता जितेंद्र कुमार और शिक्षिका मालती शर्मा ने भी बच्चों को मतदान का महत्व समझाते हुए कहा कि वह इसके लिए अपने घर में योग्य लोगों के साथ-साथ पास पड़ोस के लोगों में भी चर्चा करें और अधिक से अधिक मतदान के प्रति सभी को प्रेरित करें।गाजे बाजे के साथ स्कूल से निकाली गई रैली रामपुर गांव और चौराहे पर होते हुए वापस विद्यालय में समाप्त हुई।इस दौरान बच्चों ने हाथों में लिए मतदान से सम्बन्धित तरह-तरह के स्लोगन के माध्यम से भी लोगों को जागरुक किया। रैली मे बड़ी संख्या बच्चे और शिक्षक मौजूद रहे।

बच्चों ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

फूलपुर। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए मंगलवार को गोमती इण्टर कालेज के छात्रों के साथ ही एनसीसी कैडेट्स ने रैली निकाली। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत निकाली गई रैली में छात्र जागरूकता संबंधी नारे लगाते हुए अध्यापकों के साथ चलते रहे। फरीदाबाद, लोचनगंज, दुनियागंज सहित अन्य मोहल्लो से होते हुए रैली विद्यालय परिसर में आकर समाप्त हुई जहां पर मतदाता जागरूकता के मास्टर ट्रेनर सौरव द्विवेदी ने विस्तृत रूप जानकारी दी। रैली का फीता काटकर उद्घाटन प्रधानाचार्य ओम प्रकाश पाण्डेय ने किया। मौके पर चीफ आफिसर जेपी मिश्रा महेन्द्र यादव, राजेश पाल, नागेन्द्र तिवारी, प्रदीप शुक्ला, संजय कुमार, अभिषेक सिंह, नन्दलाल, मनुजेन्द्र, अटल सिंह सहित विद्यालय के अध्यापक व छात्र मौजूद रहे।

भाजपाइयों ने निकाली तिरंगा यात्रा

अखंड भारत संदेश

मां भारती को माल्यार्पण करते विपेन्द्र सिंह पटेल।

सहसों। स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ पर अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत सहसों खण्ड द्वारा मंगलवार को आरडी सिंह कॉलेज आफ एजुकेशन बसमहुआ से तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा का शुभारंभ कॉलेज के प्रबंधक एवं ब्लाक प्रमुख फूलपुर विपेन्द्र सिंह पटेल ने माल्यार्पण कर मां भारती की आरती उतारी तत्पश्चात तिरंगा झंडा दिखाकर यात्रा को रवाना किए। तिरंगा यात्रा कार्यक्रम में मौजूद संघ के जिला कार्यवाह बेचन सिंह ने आजादी के आंदोलन में जितने महापुरुषों ने अपने लोगों की आहुति दी थी सबको हृदय से नमन करते हुए इसके साथ ही साथ राष्ट्र के कार्य में लगे हुए नौजवानों, वीर सपूतों को भी याद करते हुए नमन किया। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले नौनिहालों के बारे में विस्तार से बताया। राष्ट्रवाद की धारणा का प्रवाह होता रहे इसके लिए भारत को पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन होना पड़ेगा। इस अवसर पर भूमि विकास बैंक फूलपुर के अध्यक्ष एवं पूर्व जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार वीरेन्द्र बहादुर सिंह एवं प्रमुख फूलपुर विपेन्द्र सिंह पटेल ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आजादी के आंदोलन में भाग लेने वाले वीर सपूतों, नौनिहालों, वीरांगनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। तिरंगा यात्रा आरडी सिंह कॉलेज बस महुआ से चलकर सहसों चौराहा होते हुए मीरापुर, भोपतपुर, महरौड़ा, हसनपुर होते हुए वापस कॉलेज आकर समाप्त हुआ। तिरंगा यात्रा कार्यक्रम में प्रमुख रूप से इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह, राजनाथ सिंह, डॉ प्रमोद कुमार गुप्ता, राजेंद्र पटेल, पुरुषोत्तम सिंह, अनिल कुमार सरोज, पवन कुमार शुक्ला, अनिल पटेल, जितेन्द्र सिंह पटेल, सियाराम कुशवाहा, मूलचन्द पाल, रितेश, लाल चन्द गुप्ता सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता एवं संघ के स्वयंसेवक शामिल रहे। तिरंगा यात्रा कार्यक्रम का संचालन करते हुए शिव कैलाश यादव जिला बौद्धिक प्रमुख गंगापार ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

खबर संक्षेप

जंघई असवां मार्ग जीर्ण शीर्ण आवागमन बाधित

जंघई। जंघई अष्टभुजा गेट से असवां एवं जंघई दुबान जाने वाली सड़क पूर्णतः गड्ढे में तब्दील हो चुकी है आवागमन बाधित हो रहा है दुर्घटना होती रहती है लेकिन सड़क मरम्मत नहीं हो रही जिससे आमजन आक्रोशित है। रधईपुर महरछा से पयागपुर कुंदौरा धाम जाने वाली सड़क एवं क्षेत्र की अन्य जर्जर हो चुकी सड़कों मे अनुवां-चनेथू महरछा, चंपापुर-हरीपुर पट्टी जलालपुर, अनुवां-राचनपुर, चंपापुर, महरछा-जंघई-पयागपुर आदि सड़कें पूर्ण रुप से क्षतिग्रस्त हो चुकी है लेकिन इनका नवीनीकरण या मरम्मत न होने से सभी आक्रोशित है।मिनटों का सफर घंटों मे तय करना पड़ रहा है। इन सड़को पर रात दिन आवागमन होने के बावजूद करीब बीस वर्षों से इनकी मरम्मत नही हुई है। अनुवां चनेथू मार्ग पर मरम्मत का कार्य जिला पंचायत से शुरू हुआ भी तो आधी बनाकर छोड़ दिया गया।प्रतिदिन दुर्घटनायें होती रहती है दो जिलों को जोड़ने वाली सड़कों की भी मरम्मत नही हो रही है।जिससे क्षेत्रवासी आक्रोशित व निराश है कि किससे गुहार लगाए कोई सुनने वाला नही।

कांग्रेस विधि टीम ने गोहरी हत्याकांड के परिजनों से की मुलाकात, कार्रवाई का दिया भरोसा

अखंड भारत संदेश

जांच करती उत्तर प्रदेश कांग्रेस विधि विभाग की टीम

प्रयागराज। प्रदेश प्रभारी प्रियंका गांधी के निर्देशन में मंगलवार को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी विधि विभाग की टीम मंगलवार को फाफामऊ के गोहरी गांव पहुंची थी। यहां एक ही परिवार के चार सदस्यों की हत्या के मामले की जानकारी ली और परिजनों को आश्वासन दिया कि उन्हें न्याय दिलाने के लिए पैरवी करेंगे। विधि विभाग के चेयरमैन नितिन मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का विधि विभाग इस घटना की जांच कराने के लिए उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल करेगा। टीम के सदस्यों ने घटनास्थल समेत आसपास के लोगों से बातचीत कर सच्चाई जानने का प्रयास की।

जांच को लेकर पुलिस कर रही लीपापोती

प्रदेश सचिव जितेन्द्र नायक ने कहा कि प्रदेश में पुलिस प्रशासन अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से नहीं निभा रही है जिसकी वजह से ही प्रदेश में अपराधियों का मनोबल बढे हुए हैं। उन्होंने कहा कि इस घटना की निष्पक्ष एजेंसी से जांच कराई जानी चाहिए क्योंकि स्थानीय पुलिस इस मामले में लीपापोती कर रही है और घटना को नया रंग देने की कोशिश कर रही है। प्रदेश उपाध्यक्ष रवीन्द्र सिंह ने कहा कि प्रदेश में पूरी तरह जंगलराज कायम है और अपराधियों को सरकारी संरक्षण प्राप्त है। कांग्रेस लीगल सेल टीम के चेयरमैन नितिन मिश्रा अपनी टीम के साथ बांदा गये जहां वह भाजपा कार्यकर्ता अमन त्रिपाठी हत्याकांड मामले की जानकारी ली। इस मौके पर हरिश्चंद्र दुबे, अतुल श्रीवास्तव, सुनील यादव, सौरभ यादव, शिव प्रकाश सिंह, अशोक श्रीवास्तव, अरूण सिंह मुन्ना समेत अन्य मौजूद रहे।

चार दिन बाद होश में आया जहरखुरानी का शिकार हुआ युवक

प्रयागराज। मुंबई से प्रयागराज पहुंचे युवक को जहरखुरानों ने चाय में जहरीला पदार्थ मिलाकर पिला दिया और लूटपाट करके उसे झाड़ियों में फेंक दिया। अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहे युवक को चार दिन बाद होश आया। होश में आने के बाद उसने पूरी कहानी बताई और खुल्दाबाद थाने में अब मुकदमा दर्ज कराया है। कौशांबी जिले के दुल्हनियापुर निवासी विजय सिंह ने मुकदमा दर्ज कराया है कि 24 अक्तूबर को उसे सूचना मिली कि मुंबई से आ रहा उसका भाई कुंवर सिंह एयरपोर्ट जाने वाले मार्ग पर बेहोश पड़ा है। उसके मुंह से झाग निकल रहा था। गंभीर हालत में कुंवर सिंह को अस्पताल में भर्ती कराया गया। चार दिन तक वह अचेत था। उसकी हालत में सुधार होने पर बताया कि 24 अक्तूबर को जैसे ही वह रेलवे स्टेशन के बाहर निकला तो एक टेंपो ड्राइवर ने पूछा कि भाई कहां जाना है। सराय अकिल स्थित गांव जाने की बात पर उसने गाड़ी में बैठा लिया। गाड़ी में पहले से ही दो लोग बैठे हुए थे। कुंवर ने 20 रुपये देकर एक बोतल पानी मंगाया। इधर इन लोगों ने चाय मंगा ली और कुंवर को भी चाय पीने के लिए दिया। चाय पीते ही उसको चक्कर आने लगा और वह बेहोश हो गया। बताया जा रहा है कि इस दौरान जहरखुरानों ने उसका 9000 रुपये, मोबाइल और अन्य सामान लूट लिया। उसे अचेत हालात में एयरपोर्ट जाने वाले मार्ग पर फेंक कर भाग निकले। इसी तरह के एक मामले में पुलिस दो जहरखुरानों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

श्रीमद्भागवत कथा सुनने से मनुष्य देव, ऋषि, पितृ तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है : राघवेंद्राचार्य

प्रतापपुर। मीरपुर गांव में कमलाशंकर द्विवेदी के यहां चल रही श्रीमद्भागवत कथा के सप्तम दिवस की कथा में कथा व्यास राघवेंद्राचार्य महाराज श्री धाम वृंदावन ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा करने एवं सुनने से मनुष्य देव, ऋषि, पितृ तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है।इसके साथ ही भगवान श्री कृष्ण के परधाम गमन परिक्षित मोक्ष की कथा के सुन्दर वर्णन के साथ कथा का विश्राम हुआ।इस अवसर पर पीसीएस अधिकारी यादवेंद्र द्विवेदी, शिक्षाधिकारी राजेश कुमार मिश्र, रविशंकर तिवारी, शारदा प्रसाद तिवारी, विजय शंकर द्विवेदी,आचार्य धीरज द्विवेदी "याज्ञिक", संगम प्रसाद तिवारी, कपिल ओझा आदि क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोग एवं विशाल जन समुदाय उपस्थित रहा।

यातायात माह के समापन अवसर पर सम्मानित होने वाले छात्र छात्राएं

यातायात माह के समापन पर छात्र-छात्राएं सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। यातायात माह के समापन पर मंगलवार को पुलिस लाइन में छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एडीजी प्रेम प्रकाश ने छात्रों और अभिभावकों से यातायात नियमों के पालन करने की अपील की। बताया कि अगर लाल सिग्नल देखकर शुरू में ही बच्चे को नहीं रोका गया तो वह आगे कभी नियम का पालन नहीं करेगा। कार्यक्रम का संचालन रंजना त्रिपाठी ने किया। बता दें कि यातायात माह के दौरान शहर के विभिन्न स्कूल व कॉलेज में छात्र-छात्राओं को जागरूक करने के लिए प्रश्नोत्तरी और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इन प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र-छात्राओं को बुलाकर पुलिस लाइन में सम्मानित किया गया।

संगम तीरे गूंजेगी मोरारी बापू की रामकथा

प्रयागराज। लगभग 21 महीने बाद एक बार फिर संगम तीरे प्रख्यात कथावाचक मोरारी बापू की रामकथा गूंजेगी। इससे पूर्व बापू की अक्षयवट मानस कथा 29 फरवरी से आठ मार्च 2020 तक अरैल में हुई थी। बापू अपनी 868वीं रामकथा के क्रम में 30 नवंबर को अयोध्या से श्रृंगवेरपुर धाम पहुंचे। वहां रात्रि विश्राम के बाद मंगलवार सुबह 10 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक श्रृंगवेरपुर में रामकथा कर रहे हैं। बुधवार को सुबह 10 बजे बापू की रामकथा बड़े हनुमान मंदिर के सामने होगी। रामकथा के लिए मंदिर के पास भव्य पंडाल बनाया जा रहा है। प्रयागराज में रामकथा के बाद बापू चित्रकूट के लिए प्रस्थान करेंगे। कथा श्रवण के लिए भक्तों को किसी तरह के पंजीकरण की जरूरत नहीं है। 27 नवंबर को अयोध्या के कारसेवकपुरम से शुरू हुई रामकथा का समापन पांच दिसंबर को नंदीग्राम अयोध्या में होगा।

फर्जी कहानी गढ़ने वाले विवेचक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का कोर्ट ने दिया आदेश

प्रयागराज पुलिस की एक और कारस्तानी के बारे में जान लीजिए....

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। केंद्रीय कारागार नैनी में निरुद्ध एक बंदी की शिवकुटी पुलिस ने ऐसी धाराओं में गिरफ्तारी दिखा दी, जिसमें उम्रकैद तक की सजा हो सकती है। चौंकाने वाली बात यह है कि पुलिस ने गुडवर्क दिखाने के चक्कर में यह सब फर्जी ढंग से किया। मामला अदालत में खुला तो कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए विवेचक समेत अन्य के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करने का आदेश एसएसपी को दिया है।दरअसल, राजकुमार वर्मा ने 30 जून 2019 को शिवकुटी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसकी पत्नी जया देवी 27 जून को मार्निंग वाक करने जा रही थी, तभी रास्ते में बाइक सवार बदमाश गले से चेन लूटकर फरार हो गए। पुलिस ने मुकदमा कायम किया। फिर 13 सितंबर को पुलिस ने शिवकुटी में रहने वाले संतोष रावत के घर जाकर जानकारी दी कि वह चेन छिनैती का अभियुक्त है जबकि सच्चाई यह है कि वह घटना के दिन यानी 30 जून से भी पहले से दूसरे मुकदमे में वह जेल में बंद था। अपर सत्र न्यायाधीश नुसरत खान की अदालत में आरोपित के द्वारा मामले में आरोप मुक्त किए जाने का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर दावा किया कि पुलिस ने उसे मनगढ़ंत और फर्जी तरीके से फंसा दिया है। प्रस्तुत उन्मोचन प्रार्थना पत्र के आधार पर कोर्ट ने नैनी जेल के अधीक्षक से रिपोर्ट तलब की।

घटना में फर्जी फंसाया, कोर्ट ने किया बरी..

प्रयागराज। जेल अधीक्षक ने रिपोर्ट में बताया कि अभियुक्त संतोष रावत 14 मई 2019 से एक जुलाई 2019 तक केंद्रीय कारागार में निरुद्ध था। मगर पुलिस की फर्द बरामदगी गिरफ्तारी के अलावा पुलिस पार्टी द्वारा लिए गए बयान का स्थान कर्नलगंज थाने का हवालात दिखाया गया है। मामले की गंभीरता देखते हुए कोर्ट ने दोबारा जेल अधीक्षक से रिपोर्ट तलब की जेल अधीक्षक द्वारा 23 नवंबर 2021 को फिर रिपोर्ट दी कि आरोपित 14 मई से एक जुलाई तक केंद्रीय कारागार में ही रहा। इस दौरान किसी भी न्यायालय में पेश नहीं किया गया। वह कारागार परिसर के बाहर भी नहीं गया। इस पर कोर्ट ने माना कि अभियुक्त जब जेल के अंदर था, तब उसके द्वारा घटना किए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसके बाद आरोपित को उस आरोप से मुक्त कर दिया।

13 दिसंबर तक दर्ज करें रिपोर्ट...

प्रयागराज। कोर्ट ने एसएसपी को आदेश दिया है कि विवेचक व गिरफ्तारी में शामिल सभी पुलिसकर्मियों के विरुद्ध 13 दिसंबर तक मुकदमा दर्ज कर अदालत को अवगत कराएं। साथ ही सभी के विरुद्ध विभागीय व अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाएं गिरफ्तारी के बाद मनमाने रूप से आरोपित के नाम जोड़ने की प्रकृति की प्रभावी रूप से निगरानी करें।

बाल संरक्षण के लिए सभी की सजगता जरूरी : जिला समन्वयक

ब्लाक स्तरीय बाल संरक्षण समिति की एक दिनी जागरुकता कार्यशाला

जागरूकता कार्यक्रम में बोलते अतिथि

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। सोमवार को ब्लॉक स्तरीय बाल संरक्षण समिति (शंकरगढ़) की जागरुकता कार्यशाला/ प्रशिक्षण/ जागरूकता कार्यक्रम विकास खंड के सभागार में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का आयोजन प्रगति ग्रामोद्योग एवं समाज कल्याण संस्थान व जिला बाल संरक्षण इकाई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्लाक प्रमुख निर्मला देवी ने की।

प्रशिक्षण में ग्राम पंचायत प्रतिनिधि, विकास खंड शंकरगढ़ की सभी आंगनवाड़ी कार्यकत्री, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनरेगा, पंचायत एवं बाल विकास विभाग से जुड़े सभी बालहित धारक, चैंपियन कार्यकर्ता शामिल हुए। प्रशिक्षण में जानकारी देते हुए प्रगति ग्रामोद्योग एवं समाज कल्याण संस्थान के जिला समन्वयक डा. विनय प्रकाश यादव ने समेकित बाल संरक्षण इकाइयों की जानकारी दी। उन्होंने जिला बाल संरक्षण के लिए चलाई जा रही योजनाओं को बताया और सभी से प्रभावित परिवारों तक लाभ पहुंचाने की अपील की।

खाता, आधार से लिंक होना जरूरी

विकास खंड शंकरगढ़ के मिड डे मील प्रभारी अनिल सिंह ने बच्चों की शिक्षा में हुए बदलाव और डीबीटी (आर्थिक लाभ) की जानकारी दी। कहा कि डीबीटी प्राप्त करने के लिए अभिभावकों के बैंक खातों का आधार कार्ड से लिंक होना जरूरी है। एडीओ (पंचायत) आरएन कुशवाहा ने सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। कहा कि योजनाओं का लाभ लेकर परिवार सक्षम बनेंगे तो बालश्रम रुकेगा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी डा. शैलेंद्र सिंह ने आयुष्मान भारत योजना की जानकारी दी। ग्राम प्रधान श्यामबाबू यादव ने बाल श्रम उन्मूलन संबंधी सरकार की विभिन्न योजनाओं में आ रही व्यवहारिक दिक्कतों की जानकारी दी।

जिम्मेदारी निभाएं बाल हितधारक

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं ब्लाक प्रमुख निर्मला देवी ने सभी बालहितधारकों से आह्वान किया कि वह अपना काम समय से और अच्छी तरह से करें, जिससे क्षेत्र में पूरी तरह से बालश्रम समाप्त हो और बच्चों का सर्वांगीण विकास हो। संचालन जिला समन्वयक सूबेदार सिंह ने किया। पूनम मिश्रा में धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मुख्य सेविका सरिता सिंह, सुषमा देवी पीजीएस कार्यकर्ता शशिकला सिंह, रविशंकर आदिवासी, सुधीर केहरी, विजय शंकर, कन्हैयालाल आदिवासी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

छात्रावास के लिए 17 तक करें आवेदन

प्रयागराज। अनुसूचित जाति व जनजाती के छात्र छात्रावास सुविधा के लिए 17 दिसंबर तक आवेदन कर सकते हैं। जिला समाज कल्याण अधिकारी प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि गरीब मेधावी छात्रों को आवासीय सुविधा दी जाएगी। 70 फीसदी सीटों पर अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। जबकि 30 फीसदी सीटों पर सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। इच्छुक छात्र समाज कल्याण विभाग से आवेदन फॉर्म लेकर जमा कर सकते हैं। इसके लिए 12 वीं पास की मार्कशीट की फोटो कॉपी, स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश की रसीद लगानी होगी।

कोरोना का नया स्वरूप ओमीक्रोन ज्यादा खतरनाक : दुकान जी

सभी को पहले से ज्यादा बचाव की जरूरत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कोरोना का नया स्वरूप ओमीक्रोन पहले वाले से ज्यादा खतरनाक है। हालांकि भारत में अभी इसकी इंट्री नहीं हुई है, फिर भी सभी को सचेत रहने की जरूरत है। शादी विवाह के सीजन में कोविड गाइड लाइन के प्रति जानकारी देने और लोगों को जागरुक करने निकले राजेंद्र कुमार तिवारी उर्फ दुकानजी ने लोगों से हाथ जोडकर मास्क का प्रयोग करने की अपील की।

नगर निगम प्रयागराज के स्वच्छताब्रांड एंबेस्डर दुकानजी ने सभी शहरियों से आह्वान किया कि हमसभीको कोविड गाइडलाइन का पालन करना चाहिए। घर से बाहर निकलने पर मास्क का प्रयोग और शारीरिक दूरी का पालन अवश्य करना चाहिए।अपनी इसी संदेश के साथ दुकानजी ने शहर के विभिन्न मोहल्ले में जागरुकता अभियान चलाया। लोगों को बताया कि कोरोना के नये स्वरूप को देखते हुए केंद्रसरकार के साथ ही प्रदेश सरकारों ने अपनी गाइडलाइन में सख्ती कर रही है। यह खतरनाक वायरल भारत में प्रवेश करे और देश का अहित करे, इससे बचाव के लिए हम सभी को अभी से सतर्क और सजग रहना होगा। उन्होंने सभी जनपदवासियों से कोविड गाइडलाइन का पालन करने की अपील की है। कहा कि प्रयागराज में कोरोना जैसी महामारी को रोकने के लिए बड़े, बच्चे, बुजुर्ग सभी लोग मास्क लगाकर घर से बाहर निकले। वैक्सीन लगवाएं। कोविड गाइडलाइन का पालन करें और दूसरों को भी इससे जागरुक करें।

लोगों को जागरूक करते दुकान जी।

शुआट्स वैज्ञानिकों ने दी किसानों को सलाह

अखंड भारत संदेश

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स) में चल रहे ग्रामीण कृषि मौसम सेवान्तर्गत भारत सरकार से प्राप्त पूवार्नुमान के अनुसार वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि गेहूँ में प्रति हेक्टयर 60 किग्रा नाइट्रोजन , 60 किग्रा फास्फेट व 40 किग्रा पोटाश बोवाई के समय प्रयोग करें । यदि खरीफ में खेत परती रहा हो या दलहनी फसल ली गयी हो , तो 60 किग्रा की जगह कुल 50 किग्रा नाइट्रोजन डालना होगा । हाँ , अगर हरी खाद का प्रयोग किया गया है तो केवल 40 किग्रा नाइट्रोजन पर्याप्त होगा । बरसीम की बुवाई के 45 दिनों बाद पहली कटाई करें । लाही की फसल में पत्तियों को खाने वाली आरा मक्खी और बालदार गिडार का नियंत्रण समय से करें । मसूर की बुवाई 20-25 सेंमी की दूरी पर कतारों में करें । मटर की बुवाई के 40-45 दिन बाद पहली सिंचाई करें । फिर 6-7 दिन बाद ओट आने पर हल्की गुड़ाई भी कर दें । टमाटर की बसन्त / ग्रीश्म ऋतु की फसल के लिए पौधषाला में बीज की बुवाई कर दें । आंवला में शूट गाल मेकर कीट से ग्रस्त टहनी को काटकर जला दें एवं पेड़ों पर डाईमेथोएट 2 मिली एवं मैकोंजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें । पिछले माह बोये गये लहसुन की निराई - गुड़ाई तथा सिंचाई करें एवं बुवाई के 40 दिन 74 किग्रा यूरिया की प्रथम टाप ड्रेसिंग कर दें। ग्लेडियोलस में स्थानीय मौसम के अनुसार सप्ताह में एक या दो बाद सिंचाई करें।

अधिवक्ता पर फायरिंग में 12 पर मुकदमा

प्रयागराज। करेली के अधिवक्ता पर दबंगों ने कैंट क्षेत्र में जानलेवा हमला किया। गोली चली और आरोपी भाग गए लेकिन किसी को गोली लगी नहीं। पीड़ित अधिवक्ता ने इस मामले में कैंट थाने में गंगानगर कैंट के लल्लन मौर्या और सत्येंद्र भदौरिया के अलावा 10 अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। आरोप लगाया है कि 29 नवंबर की शाम उन्हें सूचना मिली कि कुछ लोग उनकी प्रॉपर्टी पर अवैध निर्माण करा रहे है। वहां विरोध करने पहुंचे अधिवक्ता पर दबंगों ने गोली चला दी। आरोप है कि सत्यम भदौरिया शातिर अपराधी है और उस पर गैंगस्टर का भी मुकदमा दर्ज है। वहीं इस प्रकरण में कैंट इंस्पेक्टर का कहना है कि मौके पर किसी भी विवाद की जानकारी नहीं मिली। आसपास के लोगों ने फायरिंग की बात भी स्वीकार नहीं की। घटनास्थल पर खोखा भी वकील ने बरामद कराया है। छानबीन के बाद इस मामले में कार्रवाई की जाएगी।

मण्डलायुक्त ने माघ मेला-2022 की तैयारियों के प्रगति की समीक्षा की

मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित विभागों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत कार्य को पूर्ण कराये जाने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

माघमेला 2022 के तैयारियों की प्रगति की समीक्षा बैठक करते मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त संजय गोयल की अध्यक्षता में मंगलवार को मेला प्राधिकरण स्थित आईसीसीसी सभागार में माघ मेला-2022 की तैयारियों की प्रगति के सम्बंध में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित विभागों को माघ मेला-2022 को दिव्य, भव्य तथा सकुशल ढंग से सम्पन्न कराये जाने हेतु सभी आवश्यक तैयारियां को समय से सुनिश्चित किये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने पीडब्लूडी, सिंचाई विभाग, स्वास्थ्य विभाग, विद्युत विभाग, जल निगम, मेला प्राधिकरण, गंगा प्रदूषण सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को अपने विभाग से सम्बंधित कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण किये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि कार्य को पूर्ण करने में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाये। मण्डलायुक्त ने पार्किंग एवं टैर्जफिक व्यवस्था के सम्बंध में भी व्यवस्थित कार्य योजना के अनुसार कार्य कराये जाने के लिए कहा है। मण्डलायुक्त ने मेला क्षेत्र की बसावट में कोविड-19 से सम्बंधित मानकों का ध्यान रखते हुए कार्य योजना तैयार करने के लिए कहा। उन्होंने पीडब्लूडी को नदी के कटान को देखते हुए सर्वे कर सही जगहों पर पाण्टुन पुलों का निर्माण कार्य तेजी से पूरा कराये जाने के निर्देश दिये है साथ ही चकर्ड प्लेट बिछाये जाने कार्य को भी तेजी के साथ कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने मेला क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं/स्नानार्थियों के लिए चेंजिंग रूम, पब्लिक एड्रेस सिस्टम के साथ-साथ अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के सम्बंध में भी कार्य योजना के अनुसार कार्य कराये जाने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री, मेलाधिकारी शेषमणि पाण्डेय, एस0पी0 टैफिक, अपर आयुक्त एम0पी0 सिंह सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका: डा0 बृजभानु सिंह

अखंड भारत संदेश

पीबीपीजी कालेज में हुआ मतदाता जागरुकता कार्यक्रम

मतदाता जागरुकता कार्यक्रम में शपथ लेते प्राचार्य डा0 बृजभानु सिंह व अन्य

प्रतापगढ़। प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ सिटी में मतदाता जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य डा0 बृजभानु सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में नोडल अधिकारी डा0 मो0 अनीस द्वारा छात्रों को मतदाता जागरुकता की शपथ दिलाई गई।

उन्होंने बताया कि जिला निर्वाचन अधिकारी प्रतापगढ़ द्वारा सूचित किया गया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश के क्रम में एक नवम्बर से 30 नवम्बर तक नये मतदाता बनने की आज अंतिम तिथि है। इसके लिये वोटर हेल्पलाइन जारी की गई जिसका नाम वोटर हेल्पलाइन है। छात्रों को उत्साहित करते हुए प्राचार्य डा0 बृजभानु सिंह ने कहा कि युवा शक्ति की राष्ट्र शक्ति है और राष्ट्र के निर्माण में इनकी अहम भूमिका है।

मतदान करने तथा मतदाता बनने के लिये हम सभी को एक महोत्सव के रुप में लेकर कार्य करना होगा और अपने पास-पड़ोस में ऐसे लोग जो मतदाता नहीं बन पाए हैं, उनको मतदाता बनाने की दिशा में एक सफल प्रयास करना होगा, तभी हम शत-प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति कर सकते हैं। कार्यक्रम में कार्यक्रमाधिकारी डा0 विंध्याचल सिंह, डा0 धर्मेन्द्र प्रताप सिंह, डा0 अखिलेश मोदनवाल, अजीत सिंह, कृष्ण कुमार शर्मा, अवनीश सिंह, संतोष सिंह, बालेन्दु भूषण सिंह, संदीप कुमार मौर्या आदि लोग मौजूद रहे।

रंजिशन मारपीट मे वृद्ध समेत परिजन चुटहिल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के केशवपुर गांव मे रंजिशन हुई मारपीट मे वृद्ध समेत कई लोग गंभीर रूप से चुटहिल हुए है। पीड़िता ने घटना को लेकर पुलिस को आरोपियो के खिलाफ तहरीर दी है। हालांकि जांच मे जुटी पुलिस ने अभी तक घटना को लेकर केस नही दर्ज किया है। गांव के सोनू की पत्नी पूनम सरोज ने दी गई तहरीर मे कहा है कि मंगलवार को सुबह आठ बजे गांव के रामकिशोर के पुत्र मोनी सरोज, राहुल व रोहित तथा जयराम के पुत्र मनोज व रामकिशोर के रिश्तेदार संजय सरोज ने रंजिशन एकराय होकर लाठी डंडे तथा लोहे की राड व फरसा कुल्हाडी से लैस होकर उसके दरवाजे हमला बोल दिया। पीडिता के ससुर रामकृपाल ने गाली देने से मना किया तो आरोपियो ने रामकृपाल के सिर पर लोहे की राड तथा धारदार हथियार से हमलाकर मरणासन्न कर दिया। शोर मचाने पर पीड़िता की सास पहुंची तो उसको भी मारापीटा। इस बीच आरोपी पीडिता के घर मे घुस गये और घरेलू सामान मे तोडफोड करते हुए परिवार के सदस्यो को भी मारपीट कर चुटहिल कर दिया। पीड़िता का कहना है आरोपियों ने ऐलानियां जानलेवा धमकी देते हुए दहशत का माहौल बना दिया। इस बीच सूचना मिलने पर पुलिस व एम्बुलेंस मौके पर पहुंच गयी। गंभीर रूप से घायल रामकृपाल को एम्बुलेंस से इलाज के लिए स्थानीय सीएचसी लाया गया। इस बीच मारपीट की घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर मिली है, केस दर्ज कर आरोपियो के खिलाफ कडी कार्यवाही की जाएगी।

सड़क हादसे में चालक घायल

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी से रानीगंज जा रहे डंपर चालक को एक डाला चालक ने टक्कर मार दिया जिससे वह बुरी तरह जख्मी हो गया मौजूद लोगों ने एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। कंधई थाना क्षेत्र के बिजहरा गांव के रहने वाले धर्मेंद्र प्रताप सिंह (45) मंगलवार को रानीगंज डंपर से जा रहा था।

अपर जिला मजिस्टेज्ट ने 30 गुण्डों को जनपद की सीमा से छह माह के लिये किया निष्कासित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद प्रतापगढ़ के जिन व्यक्तियों का आस-पास के क्षेत्रों में आतंक व भय व्याप्त है और उनके विरूद्ध कोई भी व्यक्ति कुछ बोलने अथवा साक्ष्य देने का साहस नही करता है ऐसे व्यक्तियों के विरूद्ध अपर जिला मजिस्टेज्ट (वि0/रा0) सुनील कुमार शुक्ल ने गुण्डा नियंत्रण अधिनियम के तहत धारा-3(3) के तहत कार्यवाही करते हुये 30 गुण्डों को जनपद की सीमा से 06 माह के लिये निष्कासित कर दिया है। अपर जिला मजिस्टेज्ट ने जिन 30 गुण्डों को जिला बदर किया है उनमें थाना पट्टी अन्तर्गत ग्राम पहाड़ मुरार पट्टी के सूरज सुत रमाशंकर, थाना अन्तू अन्तर्गत ग्राम चौखड़ पूरे अन्ती के संतोष दूबे सुत विजय बहादुर दूबे, हरि ओम दूबे सुत विजय बहादुर दूबे, कुलदीप दूबे सुत विजय बहादुर दूबे एवं प्रदीप दूबे सुत विजय बहादुर दूबे, थाना कुण्डा अन्तर्गत हिसमपुर मनगढ़ के शिव कुमार पटेल सुत बेनीमाधव, थाना लालगंज अन्तर्गत मेढावा के संतलाल वर्मा सुत देवतादीन, थाना बाघराय के अन्तर्गत ग्राम सिया के तीरथ सुत गोपाल सरोज उर्फ द्वारिका, सिया बाजार के दशरथ लाल यादव सुत रामलाल यादव, तिलहर कसहर के लल्ला पासी सुत बुद्धन, सेती का पुरवा मजरे पचमहुआ के गब्बर उर्फ धर्मराज सुत कुवर बहादुर सिंह, गोगौर के ननके उर्फ भोले उर्फ राजकुमार सुत मनीराम, थाना जेठवारा अन्तर्गत ग्राम सराय भइया सराय आनादेव के आकाश सिंह उर्फ विराट सुत अरूणेश बहादुर सिंह, चमरूपुर पठान के मकबूल सुत फजल अली, जिशान सुत नजम अली, दिलशाद सुत नजम अली, आशापुर के जितेन्द्र यादव उर्फ चिम्बकू सुत समर बहादुर यादव व कमलेश पटेल सुत श्रीराम, थाना सांगीपुर अन्तर्गत ग्राम भैसना के तूफान वर्मा उर्फ संजय वर्मा सुत राममूर्ति वर्मा, थाना मानिकपुर अन्तर्गत ग्राम मोहामिदपुर लाल बहादुर पटेल सुत बुधई, थाना रानीगंज ग्राम गोपालपुर के महेन्द्र यादव उर्फ बड़कऊ सुत कल्लू यादव व चकसारा के नौरेज सुत शाकिर अली, थाना कन्धई ग्राम राजापुर मुफरिद के सईद सुत सगीर, यहियापुर के सलमान उर्फ हबीबुर्रहमान सुत नवाब अली, राजापुर मुफरिद के सैयद इबरार सुत मो0 फारूक, थाना फतनपुर ग्राम साढ़ के राकेश पाण्डेय सुत मातादीन पाण्डेय, थाना मानधाता ग्राम बासूपुर के तबरेज आलम सुत इमामुल्ला, थाना हथिगंवा ग्राम सैफाबाद मजरे रसूलपुर निन्दूर के गुलफाम सुत शकील, मिश्र दयालपुर के जमुना सरोज सुत गल्ला सरोज तथा थाना उदयपुर अन्तर्गत ग्राम पूरे कुर्मिन मौजा रामपुर कसिहा के संजय वर्मा सुत भगौती के नाम सम्मिलित है।

बिजली न रहने पर थाने में रहता है अंधेरा

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे स्थिति जनपद प्रतापगढ़ का नवाबगज थाना इन दिनो बिना लाइट के अंधेरे में डूबा हुआ है जब कि जनपद कौशाम्बी रायबरेली प्रतापगढ़ से जुड़ा होने के कारण यह थाना अति संवेदनशील माना जाता है, फिर भी बिजली की समस्या से जूझ से रहा है थाने परिसर में रोशनी के लिए लगाया गया सौर ऊर्जा, बैटरी, व जगनेटर के साथ इन्वर्टर खराब पड़ा हुआ है जिसकी जानकारी जिला मुख्यालय पर दे दी गयी है। केवल बिजली कनेक्शन के सहारे थाने को रोशनी मिल रही है। जब बिजली चली जाती है तो सारा काम कंपीयूटर का रुक जाता है। थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने बताया कि बिजली की समस्या से अधिकारियों को अवगत करा दिया गया है।

इरफान अली के नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनने पर हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर आयोजित हुआ स्वागत समारोह

नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इरफान अली का स्वागत करते कांग्रेसीगण

प्रतापगढ़। कांग्रेस पार्टी में अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष स्व0हाजी रमजान साहब के सुपुत्र इरफान अली को नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर नियुक्त होने पर जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह में अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी ने किया। इस दौरान मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव/प्रभारी प्रतापगढ़ मुकुंद तिवारी एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव/सह-प्रभारी प्रतापगढ़ रणजीत सिंह सलूजा एवं विशिष्ट अतिथि जूनियर बार एसोसिएशन पुरातन प्रतापगढ़ के अध्यक्ष अधिवक्ता मानसिंह एवं जूनियर बार एसोसिएशन पुरातन के महामंत्री गिरीश मिश्रा एवं यश भारती से सम्मानित डॉ. शिवानी मातनहेलिया रही। संचालन डॉ. वी.के.सिंह एवं आभार नगर कांग्रेस प्रभारी इस्तियाक अहमद ने किया। सभा में सर्वप्रथम नवनियुक्त नगर अध्यक्ष इरफान अली को माला, शाल एवं तिरंगा गमछा पहनाकर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

उसके उपरान्त नगर कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष कपिल द्विवेदी द्वारा नगर अध्यक्ष का कार्यभार नवनियुक्त नगर अध्यक्ष इरफान अली को देकर ग्रहण कराया। इस मौके पर जूनियर बार एसोसिएशन (पुरातन) अध्यक्ष मान सिंह, एवं जूनियर बार एसोसिएशन (पुरातन) के महामंत्री गिरीश मिश्रा, जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्रा, पीसीसी सदस्य डॉ.प्रशांत देव शुक्ला, कांग्रेस सेवा दल के जिला अध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला, कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश सचिव प्रेम शंकर द्विवेदी, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता सिराज अहमद खान, जूनियर बार एसोसिएशन पुरातन के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता रोहित शुक्ला आदि लोग मौजूद रहे।

धूमधाम से मना जनसत्ता लोकतांत्रिक का तीसरा स्थापना दिवस

प्रदेश अध्यक्ष ने पार्टी का झण्डा फहराकर किया शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

तीसरे स्थापना दिवस पर केक काटते महासचिव डा0 के0एन0 ओझा

प्रतापगढ़। जनसत्ता दल लोकतांत्रिक का तीसरा स्थापना दिवस पार्टी कार्यालय पर धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बाबागंज विधायक विनोद सरोज ने पार्टी का झण्डा फहराकर कार्यक्रम की शुरूआत की।

इस दौरान राष्ट्रीय महासचिव डा0 के0एन0 ओझा ने कहा कि आगामी विधान सभा चुनाव जनसत्ता पार्टी अपने दम पर लड़ेगी। आज पार्टी को तीन वर्ष हो गये और पूरे प्रदेश में संगठन बन गया है और पार्टी मजबूती से काम कर रही है। अंत में जिलाध्यक्ष राम अचल वर्मा ने आए हुए सभी पदाधिकारियों व कार्यकताओं के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन महासचिव राजकुमार सिंह ने किया। इस मौके पर अनिल कुमार सिंह लाल साहब, महिला सभा की प्रदेश सचिव गीता मिश्रा, प्रधान महासचिव मुन्ना सिंह सुजाखर, विवेक त्रिपाठी, दिनेश तिवारी, वंदना उपाध्याय, प्रवीण चतुर्वेदी, प्रमुख कुण्डा संतोष सिंह, गोल्डी सिंह, मुक्कू ओझा, मुन्ना सिंह, कृष्ण कुमार पाण्डेय, विवेक सिंह, सुभद्रा सिंह, संतोष द्विवेदी, बंटी सिंह, अंजनी सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

साइबर ठगों ने खाते से उड़ाए 25 हजार रुपये

पट्टी, प्रतापगढ़। बैंक ऑफ बड़ौदा खाता धारक के खाते से साइबर ठगों ने बिना ओटीपी बिना पासवर्ड पूछे ही 25 हजार रुपये उड़ा दिए। पीड़ित खाताधारक को जब इसकी सूचना मिली तो उसके होश उड़ गए उसने कंधई थाने में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। कंधई थाना क्षेत्र के धूती गांव के रहने वाले दुर्गेश कुमार तिवारी का बैंक ऑफ बड़ौदा में बचत खाता है पीड़ित का कहना है कि उसके खाते से बिना ओटीपी पासवर्ड पूछें साइबर ठाकुर ने उसके खाते से 25 हजार रुपये निकाल लिए हैकरों द्वारा इस वारदात की सूचना मिलने पर उसके होश उड़ गए वह पहले तो टोल फ्री नंबर पर कंप्लेंट दर्ज किया और उसके बाद पुलिस को मामले की सूचना दिया।

डांस करते समय डीजे पीछे जाने से बालक की मौत, एक गंभीर

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के धनवसिया गांव निवासी हरिश्चंद्र के बेटे सूरज की बारात बाघराय क्षेत्र के हरिहरपुर गांव अवधेश गौतम के यहां बीते सोमवार की शाम बारात गई थी। रात को लगभग साढे. नौ बजे द्वार पूजा के अवसर पर म्यूजिक पार्टी का डीजे बज रहा था।

गांव के सभी युवा डीजे की धुन पर डांस कर रहे थे डीजे चालक डीजे स्टार्ट कर जैसे ही पीछे करना चाहा, वैसे डांस कर रहे विकास उर्फ वीरू उम्र (10) वर्ष पुत्र विनोद कुमार गौतम एवं आकाश कुमार (14) वर्ष पुत्र राम सजीवन डीजे की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों घायलों के स्वजन इलाज हेतु प्रयागराज के नवाबगंज निजी चिकित्सालय ले गए जहां बीरू उर्फ विकास उम्र (10) वर्ष पुत्र विनोद कुमार की मौत हो गई। आनन-फानन में बीरू उर्फ विकास का शव घर आने पर स्वजनों में कोहराम मच गया। मौके पर पहुंची बाघराय पुलिस ने मृतक विकास उर्फ बीरू के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया इधर आनन-फानन में शादी संपन्न हो गई। मृतक विकास उर्फ वीरू के पिता विनोद कुमार ने डीजे संचालक के विरुद्ध नामजद तहरीर थाने में दे दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मृतक विकास उर्फ बीरू के पिता विनोद कुमार माता समुद्रादेवी बहन सैलबी पल्लबी जान्हवी का रो-रो कर बुरा हाल है इधर मृतक का 2 वर्षीय भाई बिकेरू का भी रो रो कर बुरा हाल है।

संदिग्धा परिस्थितियों में फांसी पर झूली महिला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जेठवारा थाना के डांड़ी झलिहन की निवासी अरूण कुमार सिंह की पत्नी किरण सिंह (27) वर्ष का संदिग्ध परिस्थितियों में घर के भीतर ही फांसी के फंदे से झूलती पायी गई। सास की स्वाभाविक निधन व पति के परदेश में होने से घर में ससुर अकेले ही रहता है। सोमवार को सुबह देर तक कमरे से बाहर ? निकलने पर आस पास सूचना के साथ पुलिस को भी सूचना दी गई। मृतका के पिता विजय प्रताप सिह निवासी त्रिशुंडी जनपद अमेठी भी मौके पर आ चुके है। मृतका को एक वर्ष की बच्ची है। जेठवारा थानाध्यक्ष ने बताया कि विवाहिता का शव घर के भीतर भीतर लटकते हुए पाया गया है।

परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण करते प्राचार्य

हेमवतीनंदन बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज में हुई आन्तरिक परीक्षाएं

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। हेमवतीनंदन बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज में नयी शिक्षा नीति 2020 के निदेर्शानुसार 23 नवंबर से 30 नवम्बर तक आंतरिक परीक्षाएं सफलतापूर्वक संपन्न हुयीं। उल्लेखनीय है कि इन परीक्षाओं के लिये 25 अंक निर्धारित हैं जो मुख्य परीक्षा के शेष 75 अंकों में हैजोड़ें जायेंगे। अभी दो परीक्षाएं 17 से 22 जनवरी 2022 तथा 7 से 12 मार्च 2022 के बीच सम्पन्न होंगी जिनमे छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य है। यह जानकारी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार मिश्र ने दी।

यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि : जीआरपी एसपी

निरीक्षण में पिस्टल और राइफल खोल, बंद नहीं कर पाये कुछ पुलिस कर्मी

अखंड भारत संदेश

जीआरपी थाने का निरीक्षण करते जीआरपी एसपी

प्रतापगढ़। लखनऊ रेलवे जीआरपी पुलिस अधीक्षक सौमित्र यादव ने मंगलवार को स्थानीय जीआरपी थाने का विधिवत निरीक्षण किया। उन्हें मातहतों को निर्देश दिया है कि हर हाल में ट्रेन यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। अपराधियों पर नजर रखी जाये। जो भी संदिग्ध मिले उन्हें गहन पूछताछ के बाद ही छोड़ा जाय। लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

कप्तान के सामने कुछ पुलिस कर्मी राइफल और पिस्टल खोल, बंद नही कर पाये। इस पर उन्होंने नाराजगी जताई। एक एक करके ट्रेनिंग पर भेजने का निर्देश एसओ को दिया है। ट्रेनों में सघन चेकिंग के निर्देश दिये हैं। दोपहर में थाने पहुंचे एसपी सौमित्र यादव ने शस्त्रागार का निरीक्षण किया। अभिलेखों को चेक किया। लंबित विवेचनाओं की पड़ताल की। शस्त्रों के निरीक्षण के दौरान एसपी ने पुलिस कर्मियों का असलहा चलाने का टेस्ट लिया। जिसमें कुछ फेल हो गये । थाने के स्टाफ के साथ मीटिंग में सिपाहियों ने रेलवे की तरफ से दी जा रही बिजली, पानी और आवास के साथ साफ सफाई की समस्या अधीक्षक को बताई। कप्तान ने कालोनी क्वार्टरों का निरीक्षण कर वास्तु स्थिति की जानकारी ली। इस संबंध में रेलवे के उच्च अधिकारियों से वार्ता कर निदान का आश्वासन दिया।पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि थाने के कुछ पुलिस कर्मियों को असलहा चलाने के लिए ट्रेनिंग की जरूरत है। उन्हें बुलाया जायेगा। कहा कि वे वार्षिक निरीक्षण पर आये थे। जिसमें शस्त्रागार, अभिलेख और थाने की सुविधाओं का निरीक्षण किया है। स्टाफ से मीटिंग हुई। जो भी समस्या है। उसका निराकरण किया जायेगा। ट्रेनों में शाम और रात को चेकिंग कराईं जा रही है। रायबरेली और प्रतापगढ़ के बीच पुलिस चौकी की स्थापना के सवाल पर उन्होंने पत्राचार की बात कही। स्नान पर्व पर जरूरत पड़ी तो जगह जगह अस्थाई चौकी बनेगी।

खबर संक्षेप

संपन्न परिवार को दिया गया बीपीएल राशन कार्ड

कौशांबी। सरसावा विकासखंड क्षेत्र के लौंगावा गांव के शैलेश चौधरी ने अधिकारियों को शिकायती पत्र देते हुए आरोप लगाया है कि गांव में खेतिहर संपन्न सरकारी नौकरी वाले व्यक्तियों को बीपीएल राशन कार्ड जारी करके सरकारी खाद्यान्न का लाभ दिया जा रहा है उसका कहना है कि गांव के गरीब निर्धन व्यक्तियों को बीपीएल राशन कार्ड नहीं जारी किया गया है शैलेश चौधरी ने अधिकारियों को दिए शिकायती पत्र में कहा है कि गरीब मजदूर और पीड़ित व्यक्तियों को राशन कार्ड दिया जाए और फर्जी तरीके से बीपीएल राशन कार्ड और अंत्योदय कार्ड बनवाने वाले के राशन कार्ड निरस्त किया जाए उसका कहना है कि कोटेदार संपन्न लोगों से सांठगांठ कर सरकारी खाद्यान्न में धांधली कर रहे हैं।

गलत तरीके से पेंशन स्वीकृत करने का आरोप

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के लौंगावा गांव के शिव लाल पुत्र शुकुरु ने डीएम को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया कि गांव के हरिप्रसाद जय नारायण कृष्ण दत्त राजेश्वर प्रसाद राम सुमिरन राम सूरत राम नारायण धर्म नारायण सहित तमाम आपात्रों को पेंशन स्वीकृत कर दी गई है। शिकायतकर्ता का कहना है कि इस गांव में झूठे अभिलेखों के सहारे तमाम लोगों को पेंशन दी जा रही है जबकि गांव के गरीब कमजोर और पेंशन योजना के पात्र लाभार्थियों को पेंशन स्वीकृत कराने में ग्राम प्रधान और खंड विकास कार्यालय के अधिकारी बाधक बन रहे हैं। शिकायती पत्र में अपात्रों की पेंशन निरस्त किए जाने और पात्रों को पेंशन दिलाए जाने की मांग की है।

शिक्षक के घर लाखों की चोरी

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर के पाता में शिक्षक त्रिभुवन सिंह घर में ताला बंद कर 28 नवंबर को परिवार सहित दावत खाने रिश्तेदारी चले गए थे 3 दिन बाद जब वह वापस घर लौटे तो देखा कि उनके घर का ताला टूटा है और उनके घर से ढाई तोला सोने के जेवर चांदी के जेवर 135000 रुपये नगद आदि सामान गायब है उन्होंने मामले की सूचना पुलिस को देकर आरोपी का नाम पुलिस को बताया है पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

डॉक्टर के भाई का निधन

भरवारी कौशाम्बी। डॉ प्रेम प्रकाश शर्मा के बड़े भाई पूर्ण प्रकाश निवासी धरमपुर कनैली उम्र 80 वर्ष की सोमवार को हृदय गति रुक जाने से उनकी मौत हो गई जिससे डॉ प्रेम प्रकाश सहित परिवार में गम का माहौल है जिनकी अंतिम यात्रा में मंगलवार को सैकड़ो लोग शामिल हुए।

स्कूल जा रहे छात्रों को अनियंत्रित ट्रैक्टर ने रौंदा दो छात्रों की मौत

हादसे के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क पर किया चक्का जाम मौके पर पहुंची कई थाने की सशस्त्र फोर्स

हादसे के बाद घटनास्थल में मौजूद ग्रामीण और पुलिस

अखंड भारत संदेश

बैरमपुर कौशाम्बी। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र में मोपेड से स्कूल जा रहे छात्रों को पीछे से अनियंत्रित ट्रैक्टर ने कुचल दिया है जिससे घटनास्थल पर 2 छात्रों की मौत हो गई है और तीसरी छात्रा हादसे में गंभीर घायल है अनियंत्रित ट्रैक्टर चालक द्वारा छात्रों को रौंदने से आक्रोशित ग्रामीणों ने ट्रैक्टर चालक को पकड़ लिया है और विभिन्न मांगों को लेकर सड़क पर चक्का जाम कर दिया है मामले की सूचना मिलते ही कई थानों की फोर्स घटनास्थल में पहुंच गई है और ग्रामीणों को समझा-बुझाकर चक्का जाम समाप्त कराया है पुलिस ने मृतक दोनो छात्रों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और हादसे में घायल छात्रा को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है ग्रामीणों ने ट्रैक्टर चालक को पुलिस को सौंप दिया है चक्का जाम कर रहे ग्रामीणों ने पुलिस से मांग करते हुए कहा कि मृतक परिजनों को मुआवजा दिलाया जाए मौके पर ब्रेकर बनवाया जाए जिससे वाहन नियंत्रित पर चल सके और भारी वाहनों के स्कूल के टाइम पर निकलने पर रोक लगाई जाए।

घटनाक्रम के मुताबिक मोहम्मद नुबेद उम्र 16 वर्ष पुत्र नूर आलम मूलनिवासी अफजलपुर वारी थाना पइंसा अपने ननिहाल पश्चिम शरीरा के निबिया में रहते है मंगलवार की सुबह मोपेड गाड़ी से मोहम्मद नुबेद अपने ममेरे भाई मोहम्मद इस्लाम उम्र 8 वर्ष पुत्र मोहम्मद इरफान और निजामा उम्र 4 वर्ष को स्कूल छोड़ने जा रहे थे जैसे ही वह सड़क पर पहुंचे तेज गति अनियंत्रित ट्रैक्टर चालक ने उनके मोपेड को रौंद दिया जिससे तीनों छात्र सड़क पर गिर पड़े घटनास्थल पर मोहम्मद नुबेद और मोहम्मद इस्लाम की मौत हो गई है हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक भागने लगा दो छात्रों की मौत के बाद आसपास के आक्रोशित ग्रामीण मौके पर पहुंचे और ट्रैक्टर चालक को दौड़ाकर पकड़ लिया आक्रोशित ग्रामीणों ने विभिन्न मांगों को लेकर चक्का जाम कर दिया है दो लोगों की मौत के बाद चक्काजाम की जानकारी मिलते ही कई थानों की सशस्त्र फोर्स मौके पर पहुंच गई है और ग्रामीणों को समझा-बुझाकर और उनकी मांग को पूर्ण करने का आश्वासन देकर चक्का जाम समाप्त कराया है पुलिस ने मृतक छात्रों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घायल छात्र को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है।

ट्रैक्टर पलटने से ड्राइवर की मौत

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के देव-खर पुर नौगीरा गांव के पास ट्रैक्टर और ट्राली पलटने से ड्राइवर की मौके पर मृत्यु हो गई है जानकारी के मुताबिक थाना मंझनपुर के देवखरपुर नौगीरा निवासी गुलाब पुत्र चंद्रपाल अपने दो अन्य साथियों के साथ खेत से ट्रैक्टर में पुआल लादकर गांव जा रहा था रास्ते में अचानक ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया जिसके कारण ट्रैक्टर पलट गया इस हादसे में ट्रैक्टर चालक गुलाब की मौके पर मौत हो गई है उसके अन्य दो साथियों को चोटे आई है जानकारी मिलने पर घटनास्थल पर पुलिस पहुंची और पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अवैध ट्रैक्टर ट्रालियों में बिना लाइसेंस के फरार्टा भरते हैं चालक

कौशांबी। जिले की सड़कों में ट्रैक्टर ट्रालियों के अवैध तरीके से दौड़ने का सिलसिला आम बात हो गई है अधिकतर ट्रैक्टर के चालकों के पास प्रशिक्षण नहीं होता है परिवहन विभाग का लाइसेंस भी नहीं होता लेकिन फिर भी थाना पुलिस यातायात पुलिस और एआरटीओ के रहमों करम पर अवैध वाहन सड़कों पर दौड़ रहे हैं आला अधिकारी मूकदर्शक हैं और इन अवैध वाहनों से बेकसूर आम जनमानस की मौत हो रही है सरकार और उनके नुमाइंदे वाहन संचालन पर चुप्पी साधे बैठे हैं।

बगैर रजिस्ट्रेशन दौड़ रहे हैं ट्रैक्टर की ट्रालियां

कौशांबी। जिले में सड़क हादसे के पीछे अवैध तरीके से चलने वाले ट्रैक्टर में लगी ट्रालियां जिम्मेदार है लेकिन थाना पुलिस से लेकर यातायात पुलिस और परिवहन विभाग के अधिकारी अवैध ट्रालियों के संचालन के पीछे मोटी रकम वसूल कर इन अवैध वाहनों को नजरअंदाज कर रहे हैं जिससे ट्रैक्टर ट्रालियों के अवैध संचालन पर रोक नहीं लग पा रही है और अवैध ट्रैक्टर ट्रालियों से आए दिन हादसे होते हैं जिसमें निर्दोष लोगों की मौत होती है।

यातायात माह में सैकड़ों हुए हादसे के शिकार

अखंड भारत संदेश

गोष्ठी मंच माला स्वागत भाषण तक सीमित रह गया यातायात माह

कौशाम्बी। यातायात माह में दुर्घटना रोकने के लिए सरकार ने यातायात पुलिस को निर्देश दिए थे लेकिन जिले में नवंबर यातायात माह में दुर्घटनाओं में कमी नहीं हो सकी प्रतिदिन हादसे होते रहे और लोग हादसे के शिकार होते रहे यातायात माह के नाम पर यातायात पुलिस से लेकर अधिकारी मंच में उपस्थित होकर केवल माला स्वागत लंबे लंबे भाषण देकर यातायात व्यवस्था सुधारने का प्रयास करने तक सीमित रह गए है मंच में बंद बोतल का पानी पीकर गला तर करने वाले अधिकारी डकार लेते रहे और हादसे में बेकसूर जनजीवन की मौत होती रही यातायात माह में भी हादसों पर रोक लगाने के ठोस उपाय नहीं बनाए जा सके हैं यातायात माह में कार्रवाई के नाम पर केवल निदोर्षों का उत्पीड़न होता रहा जिले की सड़कों पर चलने वाले डग्गामार वाहन विक्रम टेंपो टैक्सी अवैध प्राइवेट बसे ई रिक्शा पर कार्यवाही नहीं हो सकी है यातायात माह में कार्यवाही के नाम पर केवल शासन को गुमराह किया गया है हकीकत में मंझनपुर रोड से इलाहाबाद रोड पर तीन दर्जन अवैध बसे चलती है पूरे महीने बीत जाने के बाद एक भी अवैध बस पर कार्रवाई नहीं हो सकी है सड़कों पर विक्रम टेंपो टैक्सी सवारियां भर कर फरार्टा भरते है बिना लाइसेंस के चालक वाहन चलाते हैं निर्धारित सीमा से तेज वाहन भगाए जाते हैं लेकिन बिक्रम टेंपो टैक्सी पर कार्रवाई नहीं हो सकी जिले में ट्रैक्टर का रजिस्ट्रेशन लेकर बिना रजिस्ट्रेशन की ट्रालियां ट्रैक्टर में लगाकर ईटा बालू मिट्टी गिट्टी भवन निर्माण सामग्री अनाज की ढुलाई में चालक लगे हैं लेकिन अवैध तरीके से चल रहे ट्रैक्टर और उनके ट्रालियों पर पूरे महीने बीत जाने के बाद कार्यवाही नहीं हो सकी है जिससे यातायात माह में कार्यवाही के नाम पर नाटक का अंदाजा लगाया जा सकता है आखिर डग्गामार वाहनों से यातायात पुलिस के क्या रिश्ते हैं क्यों गलत वाहनों को जानबूझकर छूट दी जा रही है यातायात माह में अवैध वाहनों पर कार्रवाई और यातायात जागरूकता के नाम पर शासन और अधिकारियों को क्यो गुमराह किया जा रहा है यह बड़ा सवाल उत्पन्न हो रहा है।

न्यूज झरोखा

पश्चिम शरीरा के दंगल मैदान में दहाड़गें बसपा राष्ट्रीय महासचिव

बसपाइयों ने कार्यक्रम को लेकर झोंकी ताकत, तैयारियां तेज

कौशांबी। बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा बुधवार को मंझनपुर विधानसभा अंतर्गत पश्चिम शरीरा दंगल मैदान में एक विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। राष्ट्रीय महासचिव के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बहुजन समाज पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकताओं ने जनता के बीच पूरी ताकत झोंक रखी हैं। मंझनपुर विधानसभा की प्रत्याशी डॉ नीतू कनौजिया वैसे भी बहन जी की नीतियों को विधानसभा क्षेत्र की जनता तक पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं। बसपा नेत्री की मेहनत को सफल बनाने के लिए पार्टी राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा बुधवार को खुद पश्चिम शरीरा स्थित दंगल मैदान में विशाल जनसमूह को संबोधित करेंगे। हालांकि बहुजन समाज पार्टी 2022 के विस चुनाव को लेकर जनता के बीच अलग ही अंदाज में काम कर रही है। माना जा रहा है कि जिस तरह से मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र का एक-एक गांव एक-एक मतदाता के अलावा बसपा नेत्री डॉ नीतू कनौजिया आधी आबादी महिलाओं को संजोने में जुटी हुई है उससे जहां विपक्षी दलों में खलबली है वही मंझनपुर विधानसभा का चुनाव रोचक सा बन गया है। हालांकि इस बार मंझनपुर विधानसभा का चुनाव काफी दिलचस्प होता जा रहा है।मंगलवार को बसपा नेत्री डॉ नीतू कनौजिया के अलावा पार्टी जिला अध्यक्ष संतोष गौतम सहित पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता जनता के बीच पहुंच कर पार्टी राष्ट्रीय महासचिव के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपील किया है।

ई.सी.सी.ई. अर्ली चाइल्ड हुड केयर एजुकेशन कार्यशाला का आयोजन

बीआरसी चायल में शैक्षिक उन्नयन हेतु आयोजित की गयी कार्यशाला

कौशाम्बी। राज्य महानिदेशक स्कूल शिक्षा लखनऊ के आदेश के अनुपालन में ई0सी0सी0ई0(अर्ली चाइल्डहुड केयर एजुकेशन) कार्यशाला का आयोजन जनपद कौशाम्बी के आठों विकास खण्ड में सोमवार को प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक आयोजित किया गया स्वराज भूषण त्रिपाठी उप शिक्षा निदेशक प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मंझनपुर के आदेशानुसार कौशलेंद्र मिश्र चायल डायट मेंटर द्वारा बी 0आर0सी0 चायल व डॉ0 देवेश सिंह यादव नेवादा डायट मेंटर द्वारा बी0आर0सी0 नेवादा में आयोजित उक्त कार्यशाला का अनुश्रवण किया गया। उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत प्री प्राइमरी शैक्षिक उन्नयन हेतु बीआरसी चायल में कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में ब्लॉक के अध्यापकों तथा आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को प्रशिक्षित किया गया। मुख्य प्रशिक्षक शालिनी कुशवाहा तथा प्रियंका सिंह ने कार्यशाला की बारीकियों को बड़े ही मनोरंजक तरीके से समस्त प्रतिभागियों तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया। कार्यशाला में डायट प्रवक्ता एवं चायल ब्लॉक के मेंटर डॉक्टर कौशलेन्द्र मिश्र ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि विद्यालय आने से पहले बालक की एक और पाठशाला होती जिसमे आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की विशेष भूमिका होती है। इसके पश्चात शिक्षकों की सहभागिता पर बालक का विकास निर्भर करता है। डायट प्रवक्ता देवेश सिंह ने बताया कि प्री प्राइमरी शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन मे नींव का कार्य करती है जिसपर वह सफलता की इमारत बनाता है। कार्यशाला में बीईओ चायल समेत सभी संदर्भदाता शिक्षक संकुल नोडल ए आर पी उपस्थित रहें।

अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा

कौशाम्बी। थाना महेवाघाट पर पंजीकृत अभियुक्त पल्टू उर्फ धर्मनारायण पुत्र राम नरेश निवासी मवई थाना महेवाघाट को न्यायालय एडीज एफटीसी प्रथम द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तों को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से आजीवन कारावास व पंद्रह हजार रुपए केअर्थदण्ड से दण्डित किया गया।

2 दिन डिप्टी सीएम का कौशांबी में लगा कार्यक्रम

कौशाम्बी। 2 और 4 दिसंबर को उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य अपने गृह जनपद कौशांबी में विभागीय बैठक निमार्णाधीन कार्यों का निरीक्षण कार्यकताओं से संवाद तथा 1 दर्जन से अधिक ग्रामों में भी शिरकत करेंगे।

सड़क सुरक्षा जागरूकता के लिए चित्रकला पोस्टर पेंटिंग रंगोली लेखन कविता स्लोगन का आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतियोगिता में हिस्सा लेती छात्राएं

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महा विद्यालय में सड़क सुरक्षा जागरूकता उत्पन्न करने हेतु जनपद- कौशाम्बी में जनपद स्तरीय प्रतियोगिता, चित्रकला- पोस्टर/ पेंटिंग/ रंगोली, लेखन- कविता/ स्लोगन/ दोहा/ चौपाई क्विज प्रतियोगिता (वर्ग-उच्च शिक्षा) का आयोजन कराया गया। इस प्रतियोगिता के चित्रकला वर्ग में प्रथम स्थान अदिति चौरसिया, बी0ए0- द्वितीय वर्ष, भवन्स मेहता महा विद्यालय भरवारी द्वितीय स्थान प्रियंका सिंह बी0 एससी0 -द्वितीय वर्ष महामाया राजकीय महाविद्यालय एवं तृतीय स्थान संध्या मिश्रा, बी0ए0 -तृतीय वर्ष, महात्माबुद्ध महा विद्यालय का रहा। लेखन वर्ग में प्रथम स्थान पर शिवम कुमार साहू, बी0ए0 - तृतीय वर्ष, महामाया राजकीय महाविद्यालय द्वितीय स्थान कोमल वर्मा भवन्स मेहता महाविद्यालय भरवारी एवं तृतीय स्थान आकांक्षा देवी, बी0ए0 - द्वितीय वर्ष, महात्माबुद्ध महाविद्यालय का रहा। जनपद स्तरीय प्रतियोगिता के क्विज वर्ग में सुनील कुमार तिवारी, एम0 ए0 - तृतीय सेमेस्टर, भवन्स मेहता महाविद्यालय, भरवारी प्रथम स्थान, विकास कुमार, बी0ए0- तृतीय वर्ष, महामाया राजकीय महाविद्यालय द्वितीय स्थान पर रहे तथा रश्मि अग्रहरि, बी0एड0- टी0 आर0 एस0 कॉलेज ऑफ एडुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, जयंतीपुर तृतीय स्थान पर रहीं। निर्णायक मंडल द्वारा तीनों प्रतियोगिता के प्रत्येक वर्ग से पांच-पांच छात्रों को सांत्वना पुरस्कार हेतु चयन किया गया। महामाया राजकीय महाविद्यालय में आयोजित इस जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल समिति में राजेन्द्र कुमार भारतीय, डॉ0अरविन्द कुमार, डॉ0 भावना केसरवानी, डॉ0 धर्मेंद्र अग्रहरि,डॉ0 पवन कुमार, डॉ0अजय कुमार, डॉ0 महेंद्र उपाध्याय, डॉ0नीरज कुमार सिंह, डॉ0 नीलम बाजपेई रहे। और आयोजन समिति के सदस्य डॉ0 तरित अग्रवाल, डॉ0अमित कुमार शुक्ल, डॉ0 रमेश चंद्र,डॉ0 संतोष कुमार एवं डॉ0 शैलेश मालवीय रहे। इस आयोजन में जिला विद्यालय निरीक्षक शिवम पाण्डेय, प्राचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, कौशाम्बी भी उपस्थित रहे जनपद स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन डॉ0 विनय कुमार सिंह, प्राचार्य, महामाया राजकीय महा विद्यालय द्वारा किया गया।

चेकिंग के दौरान कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद में सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिनमें 599 वाहनों का ई चालान किया गया व 14 वाहन का चालान कर 4500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर बिना मास्क लगाकर घूमने वाले 13 व्यक्तियों से 2000 रुपए जुमार्ना वसूला गया।

अवैध शराब के साथ दो गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कडाधाम पुलिस बल द्वारा अभियुक्त बेचू पासी पुत्र रतई के कब्जे से पाँच लीटर अवैध कच्ची शराब व महेश पासी पुत्र सुतई निवासी पुरजीता थाना कडाधाम के कब्जे से पांच लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद होने पर अभियुक्तो को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

सांसद खेल प्रतियोगिता में ग्रामीण प्रतिभाओं ने बिखेरा जलवा

खेल में प्रतिभाग करते खिलाड़ी

अखंड भारत संदेश

दूसरे दिन के खेल में दौड,बालीबाल के साथ हुई क्रिकेट प्रतियोगिता

कौशाम्बी। कौशाम्बी विकास परिषद के तत्वावधान में 6 दिवसीय संसदीय स्तरीय खेल प्रतियोगिता सांसद खेल महोत्सव सांसद ट्रॉफी टेवा स्थिति स्पोर्ट्स स्टेडियम में कबड्डी क्रिकेट बालीबाल व दौड़ की प्रतियोगिता में दूसरे दिन दौड़ बालक वर्ग 3000 मीटर में अजीत सरसवां प्रथम, दुर्गेश मूरतगंज द्वितीय, पुष्पराज सिराथू तृतीय व बालिका वर्ग में 3000 मीटर शोभा मंझनपुर प्रथम, प्रीति कौशाम्बी द्वितीय,कल्पना यादव नेवादा तृतीय रहे। जबकि क्रिकेट प्रतियोगिता में सरसवां बनाम कुंडा के खेल में पहले सरसवां ने बल्लेबाजी करते हुए 6 ओवर में 3 विकेट खोकर 50 रन के जवाब में 46 रन के स्कोर पर पूरी टीम ढ़ेर हो गई। दूसरा मैच चायल बनाम मूरत गंज में चायल ने 6 ओवर में 64 रन बनाया जवाब में मूरत गंज विजयी रही।

इसी तरह बालीबाल प्रतियोगिता बालक वर्ग में बाबागंज बनाम कालाकांकर जिसमें बाबा गंज बिजयी रहा। जिसमें प्रमुख रूप से स्वाती पाण्डे,दिनेश सोनकर, जय सिंह पटेल,संदीप मिश्रा, शिवकांत मिश्र, भूपेंद्र सिंह पटेल व रूस्तम खान जिला क्रीडा अधिकारी मौजूद रहे। उक्त आशय की जानकारी सांसद के मीडिया प्रभारी राजेंद्र पाण्डेय ने दी।

एसपी ने यातायात के नियमों का पालन करने हेतु लोगों को किया जागरूक

यातायात गोष्ठी में छात्र को प्रमाण पत्र देते पुलिस अधीक्षक

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। यातायात माह नवम्बर के समापन समारोह का आयोजन मंझनपुर चौराहे पर किया गया समारोह में पुलिस अधीक्षक क्षेत्राधिकारी यातायात क्षेत्राधिकारी सिराथू यातायात प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर व थानाध्यक्ष महिला थाना तथा अन्य गणमान्न व्यक्ति उपस्थित रहे पुलिस अधीक्षक द्वारा यातायात माह के दौरान की गयी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में चर्चा की गयी व यातायात के नियमों का पालन करने हेतु लोगो को जागरूक किया गया साथ ही उपस्थित अधिकारी कर्मचारीगणों को यातायात नियमों का पालन कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया यातायात माह में आयोजित प्रतियोगी कार्यक्रमों के प्रतिभागी छात्रों को प्रमाण पत्र देकर उत्साहवर्धन किया गया।

जिले की तीनों विधानसभा से प्रत्याशी उतारेगी साकिपा : अजय सोनी

अखंड भारत संदेश

अजय सोनी ने कहा कि आने वाला समय समर्थ किसान पार्टी का है

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी जिले की तीनों विधानसभाओं से अपने प्रत्याशी उतारने जा रही है इस कड़ी में कल सिराथू से विजय शुक्ला को उम्मीदवार घोषित किया है। इसी तरह मंझनपुर विधानसभा एवं चायल विधानसभा से जल्द ही पार्टी अपने प्रत्याशी की घोषणा करेगी सूत्रों के मुताबिक मंझनपुर से पार्टी कोरी समाज के उम्मीदवार को उतारने की तैयारी में है जबकि चायल विधानसभा से पार्टी अध्यक्ष एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी खुद उतर सकते हैं। इस संबंध में पार्टी नेताओं एवं कार्यकताओं की बैठक हो चुकी है। पार्टी नेता अजय सोनी ने बताया कि पार्टी कौशांबी समेत कई स्थानीय जनपदों के कई विधानसभाओं से प्रत्याशी उतारने की तैयारी में है। कौशांबी में राजनीतिक एवं सामाजिक समीकरण को देखते हुए सिराथू से सामान्य वर्ग के उम्मीदार विजय शुक्ला, चायल से पिछड़े एवं व्यापारी वर्ग से अजय सोनी जबकि मंझनपुर से दलित एवं मजदूर वर्ग से एक कोरी समाज के उम्मीदवार को आने वाले विधानसभा चुनाव में उतारने की तैयारी में है। इस तरह पार्टी सामान्य, पिछड़े एवं दलित वर्ग से प्रत्याशी उतार कर सभी समाज के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रही है। इस अवसर पर अजय सोनी ने कहा कि अब आने वाला समय समर्थ किसान पार्टी का है। इस संबंध में समर्थ किसान पार्टी के तमाम कार्यकर्ता गांव गांव में अपने पार्टी के उम्मीदवार के प्रचार में निकल चुके हैं और तीनों विधानसभाओं में पार्टी प्रत्याशियों को जिताने में जुट गए हैं।

फिर बच निकला सॉल्वर गैंग का सरगना....

अखंड भारत संदेश

यूपी टीईटी की परीक्षा में सॉल्वर गैंग के सदस्य को एसटीएफ ने दबोचा

स्वास्थ्य विभाग में लैब टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत सॉल्वर गैंग के सदस्य पद स्वास्थ्य विभाग मेहरबान

कौशांबी। शिक्षा विभाग में धांधली कर करोड़ों कमाने वाले शिक्षा माफिया और उनके सरगना के गिरेबान तक फिर एसटीएफ के हाथ पहुंचने नहीं पहुंच सके हैं जिससे यूपीटीईटी का पर्चा आउट करने वाला सरगना कार्यवाही से बच गया है यूपी टीईटी की परीक्षा में प्रश्न पत्रों को आउट कर सॉल्वर गैंग ने परीक्षार्थियों से मोटी रकम वसूली थी कौशांबी जिले में सॉल्वर गैंग के सरगना बेखौफ तरीके से परीक्षार्थियों को लूटने में सफल रहे तमाम परीक्षार्थियों से मोटी रकम वसूल कर सॉल्वर गैंग के सरगना बंद कमरे में बंद बोतल का पानी पीकर डकार ले रहे हैं लेकिन यूपी टीईटी की परीक्षा में सॉल्वर गैंग के सदस्य रोशन सिंह पटेल लैब टेक्नीशियन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा की गिरफ्तारी के बाद गैंग के सरगना की गिरफ्तारी का प्रयास नहीं हो सका है स्वास्थ्य विभाग में तैनात यह लैब टेक्नीशियन जनपद मुख्यालय मंझनपुर सहित जिले के अन्य शिक्षा माफियाओं के संपर्क में पहले से देखा जाता है और सॉल्वर गैंग के सदस्य रोशन सिंह पटेल की गिरफ्तारी के बाद उसके मोबाइल की कॉल डिटेल निकालकर सरगना तक पहुंचने की कोशिश पुलिस अधिकारियों ने की तो कौशांबी जिले में आधा दर्जन शिक्षा माफिया बेनकाब होंगे और उन्हें जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है सॉल्वर गैंग के सरगना पुलिस और जिलाधिकारी कार्यालय पर भी देखे जाते हैं लेकिन क्या परीक्षा की सुचिता को तार-तार कर करोड़ों कमाने वाले सॉल्वर गैंग के सरगना को पुलिस बेनकाब कर पाएगी। सवाल उठता है कि शिक्षा विभाग में लैब टेक्नीशियन के पद पर तैनात रोशन सिंह पटेल ड्यूटी से गायब रहते थे और मुख्य चिकित्सा अधिकारी उन पर मेहरबानी बनाए थे स्वास्थ्य विभाग के इन अधिकारियों के कारनामो की जांच किए जाने की जरूरत है अभी तक सालवर गैंग के सदस्य रोशन सिंह पटेल पर स्वास्थ्य विभाग में कार्यवाही नहीं की है।

सम्पादकीय

क्यों डरती है सरकार

पिछले एक साल से जिन तीन कृषि कानूनों के खिलाफ हजारों किसान सड़क पर आंदोलन कर रहे थे, उन तीनों कानूनों को चंद मिनटों में मोदी सरकार ने संसद में रद्द करवा दिया। आप चाहें तो इसे बहुमत की ताकत कह सकते हैं, आप चाहें तो इसमें लोकतंत्र का मखौल उड़ता देख सकते हैं। ये सही है कि किसान लगातार इन कानूनों को रद्द करने की ही मांग पर अड़े थे, उन्हें कानूनों में न संशोधन मंजूर था, न कुछ समय का स्थगन। किसान इन कानूनों को चाहते ही नहीं थे, इसलिए उनके आंदोलन का यह उद्देश्य साफ था कि जब तक कानून वापसी नहीं, तब तक घर वापसी नहीं। और अब मोदी सरकार यही उम्मीद कर रही है कि किसान अपना आंदोलन वापस ले लिया है, तो अब किसानों को भी घर लौट जाना चाहिए। हालांकि किसानों के आंदोलन में कानून वापसी के साथ और कई दूसरी मांगें भी थीं, जिनकी सरकार उपेक्षा कर रही है। इसलिए अपनी उम्मीदों के पूरे न होने का दोष किसानों पर नहीं मढ़ा जा सकता। यह सभी को ज्ञात है कि कृषि विधेयकों को किस तरह हड़बड़ी में सरकार ने संसद से पारित करवा कर कानून बनवाया था। इसके लिए न कृषि अर्थशास्त्रियों से सरकार ने चर्चा की, न किसान संगठनों से रायशुमारी की। किसानों ने कभी ऐसे कानूनों की मांग नहीं की थी, लेकिन उन्हें जबरन थोपकर सरकार यही साबित करने पर तुली थी कि इससे किसानों का भला होगा। हालांकि इस दौरान उद्योगपतियों का कितना भला होता, यह सबको पता चल गया था। किसान सड़क पर मोर्चा खोलकर बैठे रहे, इस दौरान दिल्ली में कई बरसों बाद कड़कड़ाती सर्दी पड़ी, सर्दी के साथ भारी बारिश और हवाओं की मार खुले आसमान के नीचे रह रहे किसानों ने खाई, फिर तपती गर्मी, लू, कोरोना और प्रदूषण सारी मुश्किलें किसानों ने सहीं। लेकिन सरकार ने उनसे बातचीत के रास्ते बंद रखे।

बल्कि मंत्रियों की टोली देश भर में घूम कर प्रेस कांफ्रेंस कर कृषि कानूनों के फायदे गिनाते रही। 70 सालों में कई तरह के मिजाज वाली सरकारें देश ने देखी हैं, लेकिन ऐसी अड़ियल और संवेदनहीन सरकार पहले कभी देश में नहीं रही। अब भी कृषि कानून वापस लेने के लिए प्रधानमंत्री ने एक तरह से किसानों पर तंज ही कसा कि वे दीए के प्रकाश जैसा सत्य नहीं समझ पाए। संसद में कृषि कानून निरसन विधेयक पेश करने से पहले कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने सांसदों को जो नोट भेजा, उसमें लिखा है कि इन तीन कृषि कानूनों के खिलाफ 'किसानों का केवल एक छोटा सा समूह ही विरोध कर रहा है, समावेशी विकास के लिए सभी को साथ लेकर चलना समय की मांग है। इस नोट में एक बार फिर कृषि कानूनों से किसानों को होने वाले संभावित फायदे गिनाए हैं। साथ ही कई बार की बातचीत के बावजूद सहमति नहीं बनने का सारा दोष किसान संगठनों के सिर पर थोपा गया है। प्रधानमंत्री और कृषि मंत्री के इस रवैये से जाहिर है कि उन्हें अब भी सारी कमी किसानों में ही नजर आ रही है और अपने मनमाने कानूनों को सही ठहराने की प्रबल इच्छा को वे महज चुनावों के चलते दबा रहे हैं। ऐसे में यह संदेह होना स्वाभाविक है कि यही कानून किसी और नाम और शक्ल में फिर से देश पर थोपे जा सकते हैं। जैसे कई बार तूफान शांत होने का इंतजार मल्लाह करते हैं और फिर मछली पकड़ने के लिए अपना जाल फेंकते हैं, कुछ वैसा ही हाल चुनावों के बाद देश में देखने मिल सकता है। इसलिए अभी किसान अपनी बाकी मांगों के साथ आंदोलन जारी रखे हुए हैं, तो यह लोकतंत्र के हित में ही है। सोमवार को संसद में कृषि कानून निरस्त कराने से पहले विपक्ष ने व्यापक चर्चा की मांग रखी थी। क्योंकि कानून वापसी के साथ-साथ लखीमपुर खीरी घटना और बिजली बिल सहित आंदोलन के दौरान हुई कई घटनाओं पर चर्चा विपक्ष चाहता था। जबकि सरकार जानती थी कि अगर बात निकलेगी तो बहुत दूर तलक जाएगी। इसलिए उसने जिस तरह अपने बहुमत से कानून पारित करवाए थे, उसी बहुमत के घमंड में उन्हें बिना चर्चा के निरस्त भी करवा दिए। एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले ने इसे लोकतंत्र के लिए काला दिन बताया है और ऐसे कई काले दिन पिछले सात सालों में देश ने देखे हैं। सोमवार को जब कृषि विधि निरसन विधेयक 2021 लोकसभा में पेश हुआ तो इसके फौरन बाद कांग्रेस सहित विपक्षी दलों ने विधेयक पर चर्चा कराने की मांग शुरू कर दी। हालांकि अध्यक्ष ने कहा कि सदन में व्यवस्था नहीं है। सरकार ऐसे ही लचर तर्कों से लोकतंत्र का मजाक बना रही है। अगर विपक्षी दल हंगामा कर रहे हैं तो सरकार को उस हंगामे के कारण को समझकर उसका निवारण करना चाहिए। सदन में चर्चा के लिए माहौल और व्यवस्था दोनों बनाना चाहिए। मगर अभी ऐसा लगता है कि सरकार भी हंगामे की आड़ में चर्चा से भागना चाहती है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सही कहा है कि जिस प्रकार से इन कानूनों को रद्द किया है, बिना किसी बातचीत के वो दिखाता है कि सरकार चर्चा से डरती है। उन्होंने ट्वीट कर कहा, "चर्चा नहीं होने दी- एमएसपी पर, शहीद अन्नदाता के लिए न्याय पर, लखीमपुर मामले में केंद्रीय मंत्री की बर्खास्तगी पर उन्होंने कहा, "जो छीने संसद से चर्चा का अधिकार, फेल है, डरपोक है वो सरकार। अब देखना होगा कि अपनी बहादुरी साबित करने के लिए सरकार आगामी दिनों में चर्चा का सामना करती है या फिर जनता से और विपक्ष से भागी-भागी फिरती है।

विधानसभा चुनाव में समर्थन आधार बढ़ाने के लिए बोली

प्रदीप कपूर

बीजेपी एक तरफ गैर-यादव ओबीसी और एमबीसी और दूसरी तरफ गैर-जाटव दलितों का समर्थन हासिल करने के लिए काफी मेहनत कर रही है। पिछड़ों के शक्तिशाली कुर्मी के समर्थन को बनाए रखने के लिए भाजपा नेतृत्व ने अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व वाले अपना दल के साथ गठबंधन करने के लिए अपने हठ से हट गए। कि आगामी विधानसभा चुनावों में जाति प्रमुख कारक है, इसलिए सत्तारूढ़ भाजपा और उसकी मुख्य प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी दोनों अपने सामाजिक आधार का विस्तार करने के लिए छोटे क्षेत्रीय दलों और विभिन्न जाति समूहों के साथ गठबंधन कर रहे हैं। बीजेपी एक तरफ गैर-यादव ओबीसी और एमबीसी और दूसरी तरफ गैर-जाटव दलितों का समर्थन हासिल करने के लिए काफी मेहनत कर रही है। पिछड़ों के शक्तिशाली कुर्मी के समर्थन को बनाए रखने के लिए भाजपा नेतृत्व ने अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व वाले अपना दल के साथ गठबंधन करने के लिए अपने हठ से हट गए। गौरतलब है कि बीजेपी ने 2014 का लोकसभा चुनाव अपना दल के साथ लड़ा था और अनुप्रिया पटेल को केंद्र सरकार में मंत्री बनाया था।

2017 में फिर से बीजेपी ने अपना दल के साथ यूपी विधानसभा चुनाव लड़ा और फिर 2019 के लोकसभा चुनावों में दोनों पार्टियों का गठबंधन हुआ। लेकिन इस बार अपना दल को मंत्री पद नहीं दिया गया। भाजपा नेतृत्व की पूर्ण उदासीनता से हैरान अपना दल अध्यक्ष ने अन्य दलों के साथ बातचीत शुरू की और समाजवादी पार्टी के साथ संभावित गठबंधन के बारे में खबरें आने लगीं।

कुछ ही समय में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सक्रिय हो गए और अनुप्रिया पटेल को चर्चा के लिए आमंत्रित किया, जिसके परिणामस्वरूप वह केंद्रीय मंत्री बनीं और यूपी चुनावों के लिए गठबंधन को अंतिम रूप दिया गया। इसी तरह, भाजपा ने पहल की और संजय निषाद से संपर्क किया और विधानसभा चुनाव के लिए गठबंधन को अंतिम रूप दिया। यह ध्यान दिया जा सकता है कि निषाद समुदाय सबसे पिछड़ी जाति से संबंधित है और पूर्वी यूपी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी तरह भाजपा ने भी हिस्सेदारी मोर्चा से जुड़ी छह अन्य पार्टियों के साथ गठबंधन को अंतिम रूप दिया, जो छोटे दलों का गठबंधन था जो अपने समुदायों को आवाज देने के लिए एक साथ आए थे। इन समुदायों में बिंद, गडरिया, कुम्हार, धीवर, कश्यप और राजभर सहित ओबीसी समूह शामिल हैं। गठबंधन के संयोजक हिस्सेदारी मोर्चा केवट रामाधीन बिंद ने कहा कि उन्हें पता चला कि भाजपा गैर-यादव पिछड़ों और दलितों पर काम कर रही है, इसलिए उन्होंने गठबंधन के लिए वरिष्ठ नेताओं से संपर्क किया। यह मोर्चा विधानसभा चुनाव में बीजेपी से कम से कम 15 सीटों की उम्मीद कर रहा है। हिस्सेदारी मोर्चा की पार्टियां हैं- भारतीय मानव समाज पार्टी, शोषित समाज पार्टी, भारतीय सुहेलदेव जनता पार्टी, भारतीय समता समाज पार्टी, मानवहित पार्टी, पृथ्वीराज जनशक्ति पार्टी और मुसहर आंदोलन मंच।

दूसरी ओर, प्रमुख विपक्षी दल और मुख्य चुनौती देने वाले अखिलेश यादव भी छोटी पार्टियों और विभिन्न जाति समूहों के साथ गठबंधन कर रहे हैं ताकि उनकी समाजवादी पार्टी मतदाताओं के बड़े समूह तक पहुंच सके। अखिलेश यादव ने बार-बार घोषणा की कि वह किसी भी राष्ट्रीय पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। पिछले दिनों कांग्रेस और बसपा के साथ गठबंधन का उनका बुरा अनुभव रहा है। अखिलेश ने हाल ही में रालोद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी से मुलाकात की और गठबंधन को अंतिम रूप दिया, जिसके पश्चिमी यूपी में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। अखिलेश ने 36 सीटें रालोद के लिए छोड़ने का फैसला किया है और इनमें से कुछ सपा उम्मीदवार रालोद के चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़ेंगे। पिछले एक साल के दौरान किसान आंदोलन ने रालोद को जबरदस्त बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप जयंत चौधरी की जनसभाओं को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। जाट, मुस्लिम और अन्य पिछड़ों का गठजोड़ भाजपा को टक्कर देने के लिए एक शक्तिशाली समूह बनाएगा। अखिलेश यादव ने शक्तिशाली राजभर नेता ओम प्रकाश राजभर और उनकी पार्टी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के साथ गठबंधन को अंतिम रूप दिया, जिसका पूर्वी यूपी में बहुत प्रभाव है। 2017 की विधानसभा में भाजपा के साथ चुनाव लड़ने वाले ओम प्रकाश राजभर ने सबसे पिछड़ी जातियों की अनदेखी के लिए योगी सरकार की बहुत आलोचना की थी। 2019 के लोकसभा चुनावों के दौरान ओम प्रकाश राजभर और उनकी पार्टी ने भाजपा उम्मीदवारों का विरोध किया और चुनावों के बाद उन्होंने भाजपा से नाता तोड़ लिया।

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के साथ गठबंधन को अंतिम रूप देने के बाद, अखिलेश और ओम प्रकाश राजभर ने मऊ में एक संयुक्त जनसभा को संबोधित किया जहां गठबंधन की घोषणा की गई थी। गौरतलब है कि जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) ने भी विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव और उनकी पार्टी को समर्थन देने का ऐलान किया है। यह पार्टी सबसे पिछड़ी जाति के लोगों की है, जिनका पूर्वी यूपी में 15 से 20 सीटों पर प्रभाव है। पार्टी अध्यक्ष संजय चौहान ने प्रदेश भर के पार्टी कार्यकताओं की एक प्रभावशाली बैठक की, जिसमें अखिलेश यादव मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर बोलते हुए अखिलेश ने अब तक उपेक्षित अति पिछड़ा वर्ग के साथ सत्ता साझा करने का वादा किया। हाल ही में शक्तिशाली ठाकुर नेता और पूर्व मंत्री रघुराज प्रताप सिंह की समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव से उनके आवास पर हुई मुलाकात से काफी महत्व जुड़ा हुआ है। मुलायम सिंह यादव से मिलने के बाद, राजा भैया के नाम से जाने जाने वाले रघुराज प्रताप सिंह ने घोषणा की कि उनकी पार्टी जनसत्ता दल लोकतांत्रिक एक सम्मानजनक सीट बंटवारे के फामूर्ले के आधार पर गठबंधन के लिए तैयार है। अखिलेश यादव के अपने अलग हुए चाचा शिवपाल यादव के साथ समझौता करने और उनकी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के साथ समझौता करने की संभावना है, जिसके लिए कुछ सीटें भी छोड़ सकते हैं।

पहला सतत विकास लक्ष्य शहरी सूचकांक जारी

डॉ. हनुमंत यादव

नगरों में अधिकतम नागरिक सुविधाओं के सर्वेक्षण में शिमला ने प्रथम, कोयम्टूर ने द्वितीय और चंडीगढ़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इस सर्वेक्षण सतत विकास लक्ष्य के विभिन्न क्षेत्रों में पूर्ण सुविधा प्राप्त करने वाले नगरों के बारे में भी जानकारी एकत्रित की गई है। सतत विकास लक्ष्य कार्यक्रम के अंतर्गत अधिकांश लक्ष्य की नागरिक सुविधा मात्र एक ही नगर तक सीमित रही। सतत विकास लक्ष्य का पहला लक्ष्य, नगर से गरीबी की समाप्त करके शून्य स्तर पर लाने में तमिलनाडु का कोयम्बटूर, दूसरे लक्ष्य भुखमरी शून्य स्तर पर लाकर गरीबी से मुक्ति केरल राज्य का कोच्चि, तीसरा लक्ष्य उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली शिमला चौथा लक्ष्य गुणवत्तापरक शिक्षा केरल राज्य का तिरूवनंतपरम, पांचवा लक्ष्य, लैंगिक समानता- में कोच्चि, छठवा लक्ष्य स्वच्छ जल एवं स्वच्छता- भोपाल नगर तक सीमित रही। विगत 18 नवंबर को नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने पहला सतत विकास लक्ष्य नगरीय सूचकांक जारी करते हुए अपने वक्तव्य में कहा नीति आयोग और जीआईजेड के बीच अनूठी भागीदारी के जरिए तैयार एसडीजी शहरी सूचकांक है। राजीव कुमार ने कहा कि शहर तेजी से वृद्धि के इंजन बनते जा रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि नगरीय सूचकांक और डैशबोर्ड हमारे शहरों में एक मजबूत एसडीजी जनगरानी प्रणाली स्थापित करने में महत्वपूर्ण साबित होंगे। नगरीय सूचकांक के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि 56 क्षेत्रों में 44 बड़ी आबादी वाले बड़े नगर चुने गए हैं तथा 12 उत्तरपूर्व के राज्यों की राजधानियां चुनी गई हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख से भी कम है। पहले सतत विकास लक्ष्य के नगरीय सूचकांक में सबसे अधिक नागरिक सुविधा संपन्न नगरों में पहले स्थान पर 75.50 प्राप्तांक के साथ शिमला, दूसरे स्थान पर 73.56 प्राप्तांक के साथ कोयम्बटूर तथा तीसरे स्थान पर 72.56 प्राप्तांक के साथ चंडीगढ़ पाया गया। 65 से 99 अंक प्राप्त करने वाले नगरों को 'फ्रंट रनर नाम दिया गया है। इन तीन नगरों के बाद चौथे से दसवें स्थान पर क्रमशः तिरूवनंतपुरम प्राप्तांक 72.36, कोच्चि प्राप्तांक 72.29, पणजी प्राप्तांक 71.80, पुणे प्राप्तांक 71.21, तिरूचिरापल्ली प्राप्तांक 70.00, अहमदाबाद प्राप्तांक 69.79 और नागपुर प्राप्तांक 69.70 नगर हैं।

ये सभी फ्रंट रनर श्रेणी के नगर है। प्राप्तांक के आधार पर 64 से कम अंक प्राप्त करने वाले नगर 'प्रोफॉर्मर श्रेणी में शामिल किए जाते हैं। 56 नगरों में सबसे कम नागरिक सुविधा संपन्न 10 नगरों में सबसे निचले स्थान पर धनबाद है जिसके प्राप्तांक 52.43 है। नीचे से दूसरे स्थान पर मेरठ प्राप्तांक 54.64 तथा तीसरे स्थान पर गुवाहाटी प्राप्तांक 55.79 है। नागरिक सुविधा में निचले 10 नगरों में क्रमशः पटना प्राप्तांक 57.29, जोधपुर प्राप्तांक 58.00, कोहिमा प्राप्तांक 58.07, आगरा प्राप्तांक 58.21, कोलकाता 59.50 और फरीदाबाद 58.57 है। यहां पर प्राप्तांक निर्धारण नियमों एवं स्कीम निर्धारक के बारे में बता देना जरूरी है। प्राप्तांक निर्धारण हेतु 46 टारगेट तय किए गए हैं और मूल्यांकन के लिए 77 सूचक हैं। नीति आयोग ने 'इंडो-जर्मन डेवलेपमेंट कोऑपरेशन के तहत जीआईजेड और बीएमजेड साथ मिलकर नगरीय सूचकांक और ताजा जानकारी के लिए 'डैशबोर्ड विकसित किया है। सतत विकास लक्ष्य और इनके 169 उद्देश्य सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा है जिसे सितम्बर 2021 में युनाइटेड नेशंस आगेर्नाइजेशन की शिखर बैठक में 193 सदस्य देशों ने अनुमोदित किया था। यह पहली जनवरी 2016 से प्रभावी हुआ। भारत में नीति आयोग द्वारा इसको अमली जामा पहनाकर क्रियान्वयन किया जा रहा है। भारत में क्रियान्वयन हेतु राज्यों के योजना आयोग को यह दायित्व दिया गया है जो राज्यों के जिला स्तर तक अपनी क्षमता अनुसार यह कार्य कर रहे हैं। देश में 2020 में कोरोना कोविड की पहली लहर तथा 2021 में दूसरी लहर के कारण सतत विकास लक्ष्यों के क्रियान्वयन में शिथिलता आई थी किंतु अब पुनः लक्ष्यों के क्रियान्वयन में सक्रियता आ रही है।

3 जून 2021 को नीति आयाग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने राज्यस्तरीय सतत विकास कार्यक्रम की उपलब्धियों का तीसरा संस्करण जारी किया। इस संस्करण में पिछले सालों की भांति केरल राज्य प्रथम स्थान पर, हिमाचलप्रदेश और तमिलनाडु दूसरे स्थान पर, आन्ध्रप्रदेश, गोवा, कर्नाटका और उत्तराखंड तीसरे स्थान पर, सिक्किम चौथे और महाराष्ट्र पांचवे स्थान पर रहे। इन राज्यों को 70 से अधिक अंक प्राप्त होने के कारण ये फ्रंट रनर श्रेणी के राज्यों में हैं। दूसरी ओर सबसे पिछड़ी पंक्ति में बिहार पहले, झारखंड दूसरे, असम तीसरे, अरूणांचल, मेघालय, राजस्थान और उत्तरप्रदेश चौथे तथा छत्तीसगढ़, नागालैंड और ओडिशा पांचवें स्थान पर रहे। ये सभी पिछड़े राज्य परफॉर्मर श्रेणी के राज्य कहे जा सकते हैं। सतत विकास कार्यक्रम के नगरीय सूचकांक में प्राप्तांक के आधार पर घटते क्रम से ये नगर हैंः-1. शिमला 2. कोयम्बटूर 3. चंडीगढ़ 4. तिरूवनंतपुरम 5. कोच्चि 6. पणजी 7. पुणे 8. तिरूचिरापल्ली 9. अहमदाबाद 10. नागपुर 11. चेन्नई 12. सूरत 13 ऐजोल नगर मिजोरम राज्य 14. बेंगलुरू 15. भोपाल 16. वडोदरा, 17. शिलांग मेघालय राज्य, 18. विशाखापट्टनम, 19. नासिक, 20. दिल्ली, 21. रायपुर, 22. हैदराबाद, 23. लुधियाना 24. रांची, 25. अमृतसर, 26. इंदौर, 27. मदुरई 28. औरंगाबाद, 29. राजकोट 30. विजयवाड़ा, 31. गंगटोक सिक्किम, 32. अगरतला, त्रिपुरा 33. मुंबई, 34. ग्वालियर, 35. देहरादून, 36. लखनउ, 37. जयपुर 38. कानपुर, 39. श्रीनगर, 40. जबलपुर, 41. गाजियाबाद 42. प्रयागराज, 43. इम्फाल,मणिपुर 44. भुवनेश्वर, 45. कोटा, 46. वाराणसी, 47 . फरीदाबाद, 48. कोलकाता, 49. आगरा, 50. कोहिमा, नागालैंड राज्य 51. जोधपुर 52. पटना, 53. गुवाहाटी, 54. ईटानगर अरूणांचल राज्य, 55. मेरठ 56. धनबाद झारखंड राज्य ।

यह बताया जा चुका है कि नगरों में अधिकतम नागरिक सुविधाओं के सर्वेक्षण में शिमला ने प्रथम, कोयम्टूर ने द्वितीय और चंडीगढ़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इस सर्वेक्षण सतत विकास लक्ष्य के विभिन्न क्षेत्रों में पूर्ण सुविधा प्राप्त करने वाले नगरों के बारे में भी जानकारी एकत्रित की गई है। सतत विकास लक्ष्य कार्यक्रम के अंतर्गत अधिकांश लक्ष्य की नागरिक सुविधा मात्र एक ही नगर तक सीमित रही। सतत विकास लक्ष्य का पहला लक्ष्य, नगर से गरीबी की समाप्त करके शून्य स्तर पर लाने में तमिलनाडु का कोयम्बटूर, दूसरे लक्ष्य भुखमरी शून्य स्तर पर लाकर गरीबी से मुक्ति केरल राज्य का कोच्चि, तीसरा लक्ष्य उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली शिमला चौथा लक्ष्य गुणवत्तापरक शिक्षा केरल राज्य का तिरूवनंतपरम, पांचवा लक्ष्य, लैंगिक समानता- में कोच्चि, छठवा लक्ष्य स्वच्छ जल एवं स्वच्छता- भोपाल नगर तक सीमित रही। सतत विकास कार्यक्रम का सातवां लक्ष्यः सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जाः शिमला, आठवां लक्ष्य सराहनीय कार्य एवं आर्थिक विकास- बेंगलुरू, नौवां लक्ष्य उद्योग, नवाचार और बुनियादी सुविधाएं, सूरत गुजरात, दसवां लक्ष्य असमानताओं में कमी- अमृतसर, ग्यारहवां लक्ष्य- सवंहनीय शहर एवं समुदाय, नासिक, चौदहवां लक्ष्य जलीय जीवों की सुरक्षा, पद्रहवां लक्ष्य थलीय जीवों की सुरक्षा बारहवां लक्ष्य, संवहनीय उपभोग एवं उत्पादनःआगरा, अहमदाबाद, बेंगलुरू, फरीदाबाद हरियाणा, गाजियाबाद, गुवाहाटी, ग्वालियर, कानपुर, पटना, प्रयागराज, राजकोट, शिमला, वाराणसी, तेरहवां लक्ष्यः जलवायु कार्रवाईः एजवल, कोच्चि, शिलांग, शिमला और तिरूवनंतपरम, तथा सोलहवां लक्ष्य शांति, न्याय एवं सशक्त संस्थाएं, पणजी रहा। लक्ष्य हेतु भागीदारी सत्रहवां लक्ष्य, रहा। नवम्बर 2022 में दूसरा सतत विकास लक्ष्य नगरीय सूचकांक जारी किए जाने की संभावना है। चूंकि स्थिति अब सामान्य होती जा रही है इसलिए अगले 2022 में नगरीय सूचकांक के हर एक क्षेत्र में प्रगति होने की पूरी संभावना है।

भू-सीमा गतिविधियों पर चीन के नए कानून के भारत के लिए गंभीर निहितार्थ

अंजन रॉय

कानून कहता है कि राज्य सीमा रक्षा को मजबूत करने, आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ-साथ सीमावर्ती क्षेत्रों में खुलने, ऐसे क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार करने, लोगों के जीवन को प्रोत्साहित करने और समर्थन करने और वहां काम करने के लिए उपाय करेगा, और बढ़ावा देगा। चीनी समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने बताया कि सीमा रक्षा और सीमावर्ती क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक विकास के बीच समन्वय के लिए ऐसा किया जा रहा है। २०22 में भारत चीन के साथ लगी अपनी वास्तविक सीमा पर गंभीर घुसपैठ और घटनाओं की आशंका कर सकता है। चीनियों ने अभी-अभी एकतरफा एक नया कानून पारित किया है जो चीनी राज्य को अपनी भूमि सीमाओं के साथ कई तरह की गतिविधियां करने का अधिकार देता है, जिसका संक्षेप में मतलब है कि चीन बसने वालों को सीमावर्ती क्षेत्रों में बसा सकता है। भारत ने इस एकतरफा कदम का औपचारिक रूप से विरोध किया है। कानून कहता है कि राज्य सीमा रक्षा को मजबूत करने, आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ-साथ सीमावर्ती क्षेत्रों में खुलने, ऐसे क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार करने, लोगों के जीवन को प्रोत्साहित करने और समर्थन करने और वहां काम करने के लिए उपाय करेगा, और बढ़ावा देगा। चीनी समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने बताया कि सीमा रक्षा और सीमावर्ती क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक विकास के बीच समन्वय के लिए ऐसा किया जा रहा है। ये बस्तियां उन सभी विवादित क्षेत्रों में भी स्थापित की जा सकती हैं जहां चीन के पड़ोसी देशों के साथ मौजूदा समझौते नहीं हैं। यह ध्यान दिया जा सकता है कि दोनों देशों के बीच की पूरी सीमा वस्तुतः विवादित बनी हुई है और द्विपक्षीय रूप से स्वीकृत सीमांकन रेखाएं खींची जानी बाकी हैं। इसलिए कानून उन सभी कार्यों के लिए द्वार खोलता है जिन्हें चीनी अधिकारी उद्देश्यों और गतिविधियों के व्यापक दायरे के लिए उपयुक्त समझते हैं। इस तरह के एकतरफा प्रावधान सभी स्वीकृत राजनयिक प्रथाओं का उल्लंघन में है और एक उत्तेजक कार्रवाई हैं। भारत चीन सीमावर्ती क्षेत्र भूमि की प्रकृति के कारण दुर्गम और कम आबादी वाले हैं। चीनी नीतियां हान आबादी वाले केंद्रीय क्षेत्रों से लोगों को लाने और उन्हें उन क्षेत्रों में फिर से बसाने की हैं जिन पर वे मजबूती से नियंत्रण करना चाहते हैं। वे झिंजियांग में इस रणनीति का पालन कर रहे हैं, जहां बहुसंख्यक उइगर आबादी को अल्पसंख्यक बना दिया जा रहा है। नया कानून पिछले शनिवार को पारित किया गया था और भारत ने कानून के प्रावधानों पर गंभीर चिंता व्यक्त की है, इस डर से कि इन उद्देश्यों का पीछा करने से भारत-चीन सीमा क्षेत्र पूरी तरह से बदल सकते हैं और एलएसी को परेशान कर सकते हैं। चीन पड़ोसी देशों के साथ अपने व्यवहार में तेजी से आक्रामक रुख अपना रहा है। यह युद्ध के लगातार परिष्कृत और शक्तिशाली हथियारों के अधिग्रहण के साथ, अपनी रक्षा क्षमताओं के बारे में एक नया आत्मविश्वास महसूस कर रहा है और व्यक्त भी कर रहा है। अभी हाल ही में, चीन ने कुछ हाइपरसोनिक मिसाइलों और ग्लाइड वाहनों का परीक्षण किया है ताकि परमाणु हथियारों से लैस शस्त्रागार ले जाया जा सकें। ये वास्तव में बेहद शक्तिशाली हथियार हैं जो बैलिस्टिक मिसाइलों का पता लगाने के लिए निगरानी रडार प्राप्त कर सकते हैं। ये हाइपरसोनिक मिसाइल वाहन अमेरिकी मिसाइल ढालों को भी भेद सकते हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका ने चीनी मांसपेशियों के लचीलेपन पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। एक सर्वोच्च रैंकिंग अमेरिकी सैनिक ने इस घटना को चीन के लिए स्पुतनिक प्लस के रूप में वर्णित किया है।

जीते हारे कोई : अजेंडा तो बन गया गरीब, दलित, किसान

शकील अख्तर

अब अन्तरराष्ट्रीय स्तर से लेकर आम जनता तक कुछ मूलभूत सवाल उठने लगे हैं। सत्तारूढ़ पार्टी और सरकार के लिए इनका जवाब देना कोई मुश्किल नहीं है। उसे केवल सच के अजेंडे पर आना होगा। इससे जनता में भी और बाहर भी सरकार की छवि बनेगी। और देश का भी भला होगा। हिन्दू-मुसलमान अंतिम सत्य नहीं हैं। सत्य तो जनता ही है। और यही सही अजेंडा है जो अब यूपी में सेट हो गया है। जीत हार तो अलग बात है। मगर उससे बड़ा सवाल है कि अजेंडा किस का चलेगा तो उत्तर प्रदेश में अजेंडा प्रियंका गांधी का सेट हो गया है। देखें कैसे शुक्रवार को प्रियंका प्रयागराज पहुंचीं। वहां दलित परिवार के चार लोगों की नृशंस हत्या कर दी गई थी। प्रियंका ने वहां पीड़ित परिवार से मिलकर कहा कि वे उस नृशंस नरसंहार के विडियो देखकर और परिवार से उस भयानक वृतांत को सुनकर हिल गईं। सामंती गुंडों ने मां-बेटी से बलात्कार किया। और फिर कुल्हाड़ी से गले काटे। परिवार में एक पुरुष सदस्य बचा। जो सुरक्षा बल में है और झारखंड के नक्सलियों से लड़ रहा है। बाकी महिलाएं हैं। वे पुलिस के पास जाती हैं तो पुलिस उल्टे उन्हीं का मजाक उड़ाती है। बहुत डरी हुई हैं। कैसे रहेंगीं। कौन बचाएगा। प्रियंका ने कहा कि क्या स्थिति है। हर दो-चार दिन में वे किसी पीड़ित परिवार के पास जाती हैं। हाथरस में दलित लड़की के साथ बलात्कार के बाद उसके शव को भी परिवार को न देना और पुलिस द्वारा खुद जला देना, लखीमपुर में किसानों को मंत्री पुत्र द्वारा कुचल देना, आगरा में थाने में अरुण वाल्मिकी की मौत, और अब यह प्रयागराज में दलित फूलचंद पासी के परिवार का नरसंहार। और भी सोनभद्र, उन्नाव जाने कितनी जगहें हैं जहां प्रियंका पहुंची। प्रियंका के इन बयानों और विडियो के सामने आने के बाद शनिवार को मायावती ने इस पर ट्वीट किया। फिर उसके थोड़ी देर बाद अखिलेश यादव का ट्वीट आया। ये दोनों मुख्यमंत्री रह चुके हैं। मगर इतने बड़े हत्याकांड के बाद कोई पीड़ित परिवार को हिम्मत बंधाने नहीं पहुंचा। यहां इस समय यह बताना भी जरूरी है कि अब आंसू पोंछने नहीं साथ खड़े होने, डर कम करने के लिए जाना जरूरी होता है। हाथरस से लेकर जितने भी कांड हुए उसके बाद पीड़ित परिवार को ही और परेशान करने के मामले ही सामने आए। प्रियंका हर जगह पहुंचीं। और जैसा कि अभी प्रयागराज के मामले में देखा कि उसके बाद अखिलेश और मायावती को ट्वीट करना पड़ा। आप के सांसद और यूपी प्रभारी संजय सिंह ने भी किया। केवल ट्वीट। और वह भी इसलिए कि प्रियंका वहां गईं। प्रियंका ने पीड़ितों के साथ खड़ा होकर हिम्मत का माहौल बना दिया। उन्हें कई बार पुलिस के द्वारा रोका गया। सोनभद्र और लखीमपुर जाते हुए हिरासत में लिया गया। मगर वे पीड़ित परिवारों से मिले बिना वापस आने को तैयार ही नहीं हुईं। मजबूर होकर उन्हें जाने दिया गया।

लेकिन उत्तर प्रदेश की कोई पार्टी नम्बर एक से लेकर तीन तक की भाजपा, सपा, बसपा कोई पीड़ित परिवार के साथ खड़े होने को वहां नहीं गया। मगर इसके बावजूद वे अब इन घटनाओं को नजरअंदाज करने की स्थिति में नहीं रहे। प्रियंका ने गरीब का, दलित का, किसान का महिलाओं का अजेंडा सेट कर दिया है। अब हर पार्टी को चाहे वह सत्ता पक्ष हो या मुख्य विपक्षी दल पीड़ितों की बात करना पड़ रही है। मायावती और अखिलेश चाहे जाएं नहीं मगर ट्वीट के जरिए ही उन्हें अपना समर्थन देना पड़ रहा है और भाजपा की सरकार को चाहे वह जाति के आधार पर किसी को कम, किसी को ज्यादा मुआवजा दे मगर देना पड़ रहा है। सबसे बड़ी मुसीबत मीडिया की है प्रियंका के वहां जाने के बाद वह घटना को छुपा नहीं पाती है। चाहे कम दे, चाहे अपराधियों का समर्थन करते हुए दे मगर खबर देना पड़ रही है। यही प्रियंका की सफलता है। यही वह न्याय का, कानून व्यवस्था का, गरीब पर जुल्म का, महिला सुरक्षा का, किसान का,और आम जनता का अजेंडा है जो प्रियंका सेट करना चाह रही हैं। चुनाव के नतीजे चाहे जो हों मगर जनता के वास्तविक सवाल इस दौरान उठना चाहिए और बांटने वाले सवाल जनता से दूर होना चाहिए। प्रियंका यही कर रही हैं। उन्हें अभी यूपी का चार्ज संभाले दो साल हुए। मगर इतने कम समय में वे इतनी जगह गईं कि यूपी में जुल्म के, न्याय के सवाल खड़े होने लगे। प्रधानमंत्री को किसान बिल वापस लेना पड़े। कौन सोच सकता था कि अपनी पीछे नहीं हटने वाली छवि बनाए प्रधानमंत्री को अचानक ऐसे अपने कदम वापस खिंचना पड़ेंगे। मगर प्रियंका के लखीमपुर पहुंच जाने से यूपी में किसान का अजेंडा ऐसा सेट हुआ कि प्रधानमंत्री मोदी को पीछे हटना पड़ा। और उससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया आई किसानों की। प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद माना यह जा रहा था कि किसान खुशी-खुशी अपने घर, गांव वापस लौट जाएंगे। मगर उन्होंने एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी) की मांग को जोरदार तरीके से सामने रखते हुए फिलहाल आंदोलन खत्म करने से इंकार कर दिया। किसानों का भरोसा बढ़ा कि प्रियंका और राहुल उनके साथ आखिरी तक डटे रहने वाले लोग हैं। प्रियंका लगातार केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टैनी की बर्खास्तगी की मांग कर रही हैं। किसानों ने अपनी लखनऊ रैली वापस लेने से इंकार करते हुए मंत्री को हटाने की मांग और जोर-शोर से उठाना शुरू कर दी। भाजपा की सबसे बड़ी परेशानी यही है कि लोगों की जिन्दगी के रोजमर्रा के सवाल उठने लगे। नहीं तो वह चुनाव में केवल हिन्दु-मुसलमान चाहती है। अभी जेवर एयरपोर्ट के उद्घाटन के समय मुख्यमंत्री योगी जिन्ना की बातें कर रहे थे। जाने अनजाने में अखिलेश भी इसमें अपना योगदान दे जाते हैं। और फिर ओवैसी तो है हीं। टीवी के आधे स्क्रीन में उन्हें खड़ा करके बाकी आधे में मीडिया योगी और मोदी को खड़ा करके हिन्दू- मुसलमान का जहर उगलना शुरू कर देता है। मीडिया अपनी तरफ से आग लगाने की पूरी कोशिश कर रहा है। लेकिन अब जनता के सामने उसके असली सवाल इतने आ गए हैं कि वह काल्पनिक सवालों में उलझने को तैयार नहीं है। महंगाई, बेरोजगारी से हर आदमी जूझ रहा है। रोजी-रोटी के लाले पड़े हुए हैं। वह देख रहा है कि जितना हिन्दू परेशान है उतना ही मुसलमान। टमाटर की कीमत सबके लिए समान है।

दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्रालय ने दी गारंटी, टीम इंडिया को 'ओमिक्रॉन' वैरिएंट से कोई खतरा नहीं

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम अगले महीने यहां सीरीज खेलने पहुंचेगी तो उसके लिए कंप्लीट जैव सुरक्षित माहौल (बायो-बबल) तैयार किया जाएगा। मंत्रालय ने साथ ही कोविड-19 का नया वैरिएंट मिलने के बावजूद 'ए' टीम के दौरे से नहीं हटने के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की तारीफ भी की। भारत ए मंगलवार से ब्लोमफोंटेन में दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ दूसरा अनऑफिशियल टेस्ट खेलेगा। नया ओमिक्रॉन वैरिएंट मिलने के कारण वैश्विक चिंताओं के बावजूद भारतीय बोर्ड ने दक्षिण अफ्रीका में सीरीज जारी रखने का फैसला किया है। भारतीय सीनियर टीम भी 17 दिसंबर से दक्षिण अफ्रीका में तीन टेस्ट खेलेगी, जिसके बाद इतने की वनडे इंटरनेशनल सीरीज और चार टी-20 इंटरनेशनल मुकाबले भी होंगे। विराट कोहली और उनकी टीम नौ दिसंबर को यहां पहुंचेगी, लेकिन देश में कोविड का ओमिक्रॉन वैरिएंट मिलने के बाद दौरे को लेकर कुछ चिंताएं हैं। इस नए वैरिएंट के सामने आने के बाद कई देशों ने यात्रा पाबंदियां लगाई हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग विभाग (डर्को) जो देश का विदेश मंत्रालय है, ने कहा, "भारतीय टीम के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए दक्षिण अफ्रीका सभी जरूरी एहतियाती कदम उठाएगा। दक्षिण अफ्रीका और भारत 'ए' टीम के अलावा दोनों नेशनल टीम के लिए पूर्ण रूप से जैव सुरक्षित माहौल तैयार किया जाएगा।"

मंत्रालय ने कहा, "भारत 'ए' टीम के दौरे को जारी रखकर एकजुटता दिखाने का भारत का फैसला कई देशों के विपरीत है, जिन्होंने अपनी सीमाओं को बंद करने और दक्षिण अफ्रीका से यात्रा को सीमित करने का फैसला किया है।" मंत्रालय ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका सरकार दौरा जारी रखने के लिए बीसीसीआई की सराहना करती है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहला टेस्ट जोहानिसबर्ग में खेला जाएगा, जबकि दूसरा टेस्ट सेंचुरियन में 26 दिसंबर से होगा। तीन मैच केपटाउन में तीन जनवरी से खेला जाएगा। मंत्रालय ने कहा, "भारतीय नेशनल टीम का दौरा दक्षिण अफ्रीका की इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी की 30वीं वर्षगांठ भी होगा। दक्षिण अफ्रीका सरकार की रंगभेद नीतियों के कारण 1970 में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) द्वारा दक्षिण अफ्रीका टीम को इंटरनेशनल क्रिकेट से प्रतिबंधित करने के बाद भारत 1991 में देश की इंटरनेशनल टीम की मेजबानी करने वाला पहला देश बना था।

दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ चमके इशान पोरेल और नवदीप सैनी, मेजबान टीम का स्कोर 233-7

ब्लोमफोंटेन। इशान पोरेल और नवदीप सैनी की अगुआई में गेंदबाजों के उम्दा प्रदर्शन से भारत ए ने दूसरे अनऑफिशियल क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन दक्षिण अफ्रीका ए का स्कोर सात विकेट पर 233 रन किया। तेज गेंदबाज पोरेल ने 26 जबकि सैनी ने 54 रन देकर दो-दो विकेट चटकाए। अर्जन नागवासवाला (44 रन पर एक विकेट), सौरभ कुमार (64 रन पर एक विकेट) और बाबा अपराजित (34 रन पर एक विकेट) ने भी उनका अच्छा साथ निभाया। दक्षिण अफ्रीका ए ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए।

जॉर्ज लिंडे (44), सलामी बल्लेबाज सारेल इर्वी (38), रेनार्ड वान टोंडर (34), सिनेथेंबा केशिले (32) और जुबेर हमजा (31) अच्छी शुरूआत को बड़ी पारी में बदलने में नाकाम रहे।

दिन का खेल खत्म होने पर मार्को जेनसन 38 जबकि लुथो सिपामला एक रन बनाकर खेल रहे थे। लिंडे और जेनसन ने सातवें विकेट के लिए 53 रन जोड़कर दक्षिण अफ्रीका ए का स्कोर 200 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। लिंडे ने 63 गेंद का सामना करते हुए तीन चौके और एक छक्का मारा जबकि जेनसन 62 गेंद की अपनी पारी में अब तक पांच चौके और एक छक्का जड़ चुके हैं। इससे पहले दक्षिण अफ्रीकी की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। टीम की शुरूआत खराब रही और उसने दूसरे ओवर की पहली ही गेंद पर पिछले मैच में शतक जड़ने वाले कप्तान पीटर मलान (00) का विकेट गंवा दिया, जिन्हें नागवासवाल ने एलबीडब्ल्यू आउट किया। इर्वी और टोंडर ने इसके बाद 27 से अधिक ओवर तक भारतीय गेंदबाजों को सफलता से महरूम रखा। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 72 रन की साझेदारी की। पोरेल ने हालांकि इन दोनों को लगातार ओवरों में पवेलियन भेजकर मेजबान टीम को दोहरा झटका किया। टोंडर ने कप्तान प्रियांका पांचाल को कैच थमाया जबकि इर्वी अभिमन्यु ईश्वरन को कैच दे बैठे। इर्वी ने 92 गेंद की अपनी पारी में छह चौके मारे जबकि टोंडर ने 87 गेंद का सामना करते हुए तीन चौके जड़े।

पिछले मैच में शतक जड़ने वाले टोनी डि जॉर्जी (02) को सैनी ने पवेलियन भेजकर दक्षिण अफ्रीका ए का स्कोर चार विकेट पर 92 रन किया। हमजा भी इसके बाद सौरभ की सीधी गेंद को चूककर बोल्ड हो गए। लिंडे और केशिले ने छठे विकेट के लिए 44 रन की साझेदारी की। बाबा अपराजित ने केशिले को इशान किशन के हाथों स्टंप कराके भारतीय टीम को छठी सफलता दिलाई। लिंडे और जेनसन ने टीम का स्कोर 200 रन के पार पहुंचाया। सैनी ने लिंडे को ईश्वरन के हाथों कैच कराके इस साझेदारी को तोड़ा।

राजस्थान ने पृथ्वी जायसवाल तो मुंबई ने सूर्यकुमार यादव को किया रिटेन

नई दिल्ली। ऐसा हम इसलिए बोल रहे हैं, क्योंकि रिटेन होने वाले खिलाड़ियों के नाम की घोषणा से पहले धोनी ने साफ कर दिया था कि वह पहले रिटेंशन पिक नहीं बनना चाहते हैं। आईपीएल 2022 के रिटेंशन नियमों के अनुसार, पहले रिटेंशन पिक को 16 करोड़ रुपये मिलते हैं। तब धोनी ने कहा था कि यह मौका किसी और खिलाड़ी को मिलना चाहिए, ताकि टीम को अपने फंड को बेहतर तरीके से आवंटित करने में मदद मिल सके। टीम ने यहां उनके इस फैसले का सम्मान किया और जडेजा को उनसे पहले चुना।

ऑफ स्पिनर आर अश्विन का बड़ा खुलासा, बोले- पिछले साल लगा कि टेस्ट क्रिकेट फिर नहीं खेल पाऊंगा

कानपुर। टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए सर्वाधिक विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज बने ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने खुलासा किया है कि उन्हें डर था कि पिछले साल कोरोना महामारी के कारण उपजी परिस्थितियों के बीच उनका करियर खत्म हो जाएगा।

पैंतीस साल के अश्विन ने अपने 80वें टेस्ट में 419वां विकेट लेकर हरभजन सिंह (103 टेस्ट में 417 विकेट) को पछाड़ दिया। उन्होंने कहा कि पिछले साल की शुरूआत में भारतीय टीम के न्यूजीलैंड दौरे के बाद उनका करियर दोराहे पर था। बीसीसीआई की वेबसाइट के लिए अपने साथी खिलाड़ी श्रेयस अय्यर को दिए इंटरव्यू में उन्होंने कहा, "ईमानदारी से कहूं तो कोरोना महामारी और लॉकडाउन के बीच मेरी लाइफ और करियर में पिछले कुछ साल से जो कुछ हो रहा था, मुझे पता नहीं था कि टेस्ट क्रिकेट फिर खेलूंगा या नहीं। उन्होंने कहा, "मैने क्राइस्टचर्च में 29 फरवरी 2020 से शुरू हुआ आखिरी टेस्ट नहीं खेला था। मैं दोराहे पर था कि दोबारा टेस्ट खेल सकूंगा या नहीं। मेरा भविष्य क्या है। क्या मुझे टेस्ट टीम में जगह मिलेगी, क्योंकि मैं वही फॉर्मेट खेल रहा था। ईश्वर दयालु है और अब हालात बिल्कुल बदल गए हैं।" अश्विन ने कहा, "मैं दिल्ली कैपिटल्स टीम में आया और जब तुम (श्रेयस) कप्तान थे तभी से हालात बदलने लगे।" अश्विन का पूरा परिवार मई में कोरोना संक्रमण की चपेट में आ गया था। उन्हें इस वजह से आईपीएल भी छोड़ना पड़ा था। उन्होंने कहा कि हरभजन ने उन्हें ऑफ स्पिन गेंदबाजी के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2001 में हरभजन के प्रदर्शन को देखकर ही वह ऑफ स्पिनर बनने की ओर प्रेरित हुए।

ऑफ स्पिनर आर अश्विन का बड़ा खुलासा, बोले- पिछले साल लगा कि टेस्ट क्रिकेट फिर नहीं खेल पाऊंगा

नई दिल्ली। नई फ्रेंचाइजी के पास 1 दिसंबर से 25 दिसंबर तक तीन खिलाड़ियों (दो भारतीय और एक विदेशी) को साइन करने का समय है, जिन खिलाड़ियों को मौजूदा आठ मौजूदा फ्रेंचाइजी के द्वारा रिटेन नहीं किया गया है। उन्हें नई फ्रेंचाइजी अपने टीम में शामिल कर सकती है।

आईपीएल की आठ मौजूदा टीमें अधिकतम चार खिलाड़ियों को रिटेन कर सकेंगी। दो अलग-अलग संयोजन के साथ टीमें रिटेंशन के लिए अप्लाई कर सकती हैं। संयोजन में तीन भारतीय और एक विदेशी या दो भारतीय और दो विदेशी शामिल हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि भारतीय खिलाड़ी कैप्ड हैं या अनकैप्ड। नीलामी में राइट-टू-मैच कार्ड नहीं होंगे। प्रत्येक खिलाड़ी के पास यह फैसला लेने का हक होगा कि वह उस फ्रेंचाइजी के साथ रहना चाहता है या नहीं। हाल ही में आईपीएल ने नीलामी पर्स को बढ़ाकर 90 करोड़ रुपये कर दिया था, साथ ही विभिन्न रिटेंशन स्लैब भी सेट किए गए थे। मौजूदा फ्रेंचाइजी अधिकतम चार खिलाड़ियों को रिटेन कर सकती है जबकि दो नई अनाम फ्रेंचाइजी- जो लखनऊ और अहमदाबाद के रूप में है, वह मूल आठ टीमों के रिटेन करने के बाद प्लेयर पूल से तीन-तीन खिलाड़ी खरीद सकती हैं।

आढती के अपहरण की आशंका लेकर किशनी मण्डी के आढतियों ने बंद किया कारोबार

काली पट्टी बांध कर जताया बिरोध

अखंड भारत संदेश

किशनी। रविवार को बेबर से लौटते समय गल्ला व्यापारी बलराम सिंह के साइकिल संपर्क मार्ग पर खडी मिली थी। परिजनों से उनके अपहरण की आशंका व्यक्त की थी।

गल्ला व्यापारी के अपहरण की आशंका को लेकर नगरपंचायत स्थित नवीन मण्डी के आढतियों में काफी रोष है। सोमवार को मण्डी में व्यापार कर रहे करीब पच्चीस ब्यापारी तथा अन्य कर्मचारी जिनमें पल्लेदार भी शामिल है ने मण्डी कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन किया तथा बाजू में काली पट्टी बांध कर बिरोध जताया। मण्डी के सचिव शहाबुद्दीन खां ने कहा कि सारे व्यापारीगण तबतक व्यापार नहीं करोंगे जबतक कुसमरा के महाराज ट्रेडिंग कम्पनी के मालिक वलराम सिंह की पुलिस वरामदगी नहीं करलेती। उन्होंने पुलिस की कायर्प्रणाली पर प्रश्न उठाते हुये कहा कि दिनदहाडे एक व्यापारी का अपहरण होजाता है और पुलिस चुपचाप बैठी तमाशा देख रही है। इस मौके पर मण्डी समिति किशनी के अध्यक्ष ओमबीर यादव,राजीब गुप्ता, योगेन्द्र सिंह, प्रमोद यादव,रामबहादुर शाक्य,ओमेन्द्र मिश्रा,बिजय गुप्ता,अशोक गुप्ता,ओपी कठेरिया,संजीब यादव,शिवम यादव,सोनू यादव आदि मौजूद रहे। दूसरी ओर कुसमरा मण्डी आढती संघ ने एसपी को ज्ञापन दिया है कि 12 घंटे बीत जाने के बाद भी बलराम आढती का सुराग लगाने में पुलिस नाकाम रही है। उन्होंने कहा है कि 24 घंटों के अन्दर यदि आढती का पता न चला तो सभी ब्यापारीगण अपने अपने प्रतिष्ठान बंद रखेंगे। मांग करने बालों में राकेश शुक्ला, संजीब तिवारी,संजू गुप्ता,प्रदीप चौहान,अवधेस चैहान,धनन्जय पाण्डेय,शिवपाल सिंह,प्रवेश शुक्ला,सतेन्द्र यादव,इन्द्रपाल,रबिन्द्र यादव आदि थे। पुलिस के अनुसार प्रधान अजबसिंह को पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

आढ़तिया के परिजनों व ग्रामीणों ने प्रशासन के विरुद्ध इटावा बरेली राजमार्ग को अवरुद्ध किया

अखंड भारत संदेश

किसनी। नगर की गल्ला मंडी में महाराज सिंह ट्रेडिंग कंपनी के मालिक बलराम यादव का मैनपुरी मंडी से भुगतान लेकर आते समय बेवर कुसमरा के मध्य रविवार की शाम को अपहरण हो गया था लेकिन सोमवार को सुबह 10 बजे तक कुछ पता ना चलने पर उनके परिजनों व ग्रामीणों ने प्रशासन के विरुद्ध इटावा बरेली राजमार्ग को अवरुद्ध कर दिया। जिसकी सूचना मिलते ही किशनी थानाध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार बेवर थानाध्यक्ष सुरेश शर्मा एलाऊ थानाध्यक्ष सुनील भारद्वाज पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गये। उसके बाद उच्चाधिकारियों की माग पर उप जिला अधिकारी किशनी जयप्रकाश सिंह क्षेत्राधिकारी भोगांव चंद्रकेश सिंह सीओ सिटी अमर बहादुर सिंह ने मौके पर आकर परिजनों व ग्रामीणों को समझा कर घटना को खोलने के लिए समय मांगा। जिस पर परिजनों व ग्रामीणों ने 24 घंटे का समय दिया अगर घटना का खुलासा नहीं हुआ तो पुन जाम लगाने की बात कही उसके बाद किशनी विधायक बृजेश कठेरिया भी जाम स्थल पर पहुंच गए और प्रशासन से आढतिया के अपहरण की घटना का 24 घंटे में खुलासा करने की मांग की। वही अढतिया के अपहरण को लेकर कुसमरा गल्ला मंडी मे आढतिया के अपहरण होने पर मंडी को बंद रखा।

नाबालिग के साथ दुष्कर्म के बाद बच्चे की हालत गंभीर

शिकायत पर पुलिस ने तीन के खिलाफ मुकदमा किया दर्ज

अखंड भारत संदेश

किशनी। थानाक्षेत्र के एक गांव में एक नाबालिग के साथ दुष्कर्म की घटना के बाद क्षेत्र के हर मातापिता के माथे पर चिन्ता की लकीरें उभर आई है कि कहीं येसा न हो कि कोई हैवान उनके बच्चे के साथ भी कोई अनहोनी न कर दे।

गांव निवासी एक पिता ने पुलिस को तहरीर दी है कि रविवार की शाम सात बजे वह गांव में सम्पन्न हो रहे तेरहवीं के कार्यक्रम में गये हुये थे। उनका बेटा वहीं पर खेल रहा था। इसबीच मौका पाकर उनके सात साल के बेटे को गांव का ही नामजद वरसीम के खेत में लेगया और उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया। दुष्कर्म के बाद बच्चे की हालत बेहद खराब होगई। जब वह उसके घर शिकायत लेकर गये तो आरोपी का भाई और मां ने उनके साथ गालीगलौज की और मारपीट कर जान से मारने की धमकी दी।पुलिस ने सख्त रूख दिखाते हुये तीनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोपियों को पकडने के लिये पुलिस दबिस दे रही है '

मारपीट की रिपोर्ट दर्ज हो जाने के बाद दूसरे पक्ष ने भी दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

किसनी। क्षेत्र के गांव किशनपुर मुर्गिया निवासी मोहित यादव पुत्र रामनेरश ने तहरीर दी कि उनके गांव के सतेन्द्र पुत्र अभयराज,रूबीदेवी पत्नी सतेन्द्र ने उनके बाबा नौरतनसिंह के साथ खेत में पानी भरने को लेकर गालीगलौज और मारपीट की। पुलिस ने कार्यवाही की और दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।इसके बाद दूसरे पक्ष से रूबीदेवी पत्नी सतेन्द्र भी थाने आये और उन्होंने नौरतनसिंह पुत्र छोटेलाल,रामनेश पुत्र नौरतनसिंह,मोहित पुत्र रामनेश के खिलाफ तहरीर दी कि उक्त लोग उनके चबूतरे पर रखे दस बोरे लेगये और जब कहासुनी की तो उक्त सभी ने उनके साथ मारपीट की। पुलिस घटना की जांच कर रही है।

एक साथ मना नवंबर माह में जन्मे बच्चों का जन्मदिन

स्कूल पहुंचते ही हैपी बर्थडे सुन निहाल हुआ बचपन

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। बच्चों को स्कूल से जोडने, पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करने, स्कूल का माहौल बच्चों के अनुकूल बनाने में जुटे बेसिक शिक्षा विभाग का प्रयास अनवरत जारी है। विकास खंड के कंपोजिट विद्यालय कलीपुर में आज नवंबर महीने में जन्मे बच्चों का जन्मदिन एक साथ मनाया गया।

जन्मदिन समारोह के आयोजन के लिए स्कूल को रंग बिरंगे गुब्बारे, फूल, चित्रकारी से सजाया गया। विद्यालय परिसर की करीने से साफ-सफाई करवाई गई। और, जैसे ही नवंबर महीने में जन्म लेनेवाले बच्चे स्कूल पहुंचे, शिक्षकों ने हैपी बर्थडे कहकर गले से लगा लिया। बिना किसी जानकारी के जन्मदिन समारोह का आयोजन देख बच्चे भी निहाल हो गए।

सभी बच्चों के एकत्र होने के उपरांत प्रार्थना हुई। तत्पश्चात नवंबर महीने में जन्म लेनेवाले बच्चों के अभिभावकों को बुलवाया गया। अभिभावकों की मौजूदगी में सभी का जन्मदिन के साथ मनाया गया। बच्चों के बीच केक, टाफी, बिस्किट का वितरण किया गया। इसके बाद बच्चों के साथ खेलकूद व अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल के सभी बच्चों ने खूब मौज-मस्ती की।

सहायक अध्यापकों ने एक साथ मनाया जन्मदिन, बच्चों के अभिभावकों की मौजूदगी में काटा गया केक

बच्चों का जन्मदिन मनाते शिक्षकगण

कंपोजिट विद्यालय कलीपुर में आज कक्षा दो के रोहन, कक्षा चार की आंशिका, कक्षा तीन के आदिम, समर, लक्ष्य और राशि, कक्षा छह की प्रिया का जन्मदिन मनाया गया। इस मौके पर बच्चों के अभिभावक भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के आयोजन में प्रधानाध्यापक दयाराम, शिक्षिका प्रीति मौर्या, डा. देवेश कुमार राय, राकेश कुमार मौर्य, प्रीती सिंह, मंजेशचंद्र, शिक्षामित्र रंजू सिंह, अनुदेशक कपूरचंद्र व पूनम केसाथ रसोइया का भी सहयोग उल्लेखनीय रहा। गौरतलब हो कि गत दिनो खंड शिक्षा अधिकारी रवींद्र शुक्ल द्वारा विद्यालयों के निरीक्षण के दौरान शिक्षकों को इस तरह से बच्चों का उत्साह वर्धन करने व स्कूल आने के लिए प्रेरित करने हेतु जन्म दिन मनाने के लिए प्रोत्साहित किया था।

शराबी चालक ने बिजली के खम्बों में मारी टक्कर, मुहल्लों की बिजली गुल

किशनी। सोमवार सुबह नगर से निकल रहे एक डंफर चालक ने डंफर को नशे में झपकी आ जाने से बिजली के पोल से टकरा गया,गनीमत रही कि कोई हादसा नही हुआ,सूचना पर पहुची पुलिस ने चालक को हिरासत में लेकर मेडिकल कराया है,थाना प्रभारी धर्मेन्द्र कुमार ने बताया कि सुबह 8 बजे सूचना मिली कि नगर के कुसमरा वेवर मार्ग पर इंडेन गैस गोदाम के पास एक डंफर रोड के किनारे बिजली पोल से टकरा गया है पुलिस ने मौके पर जाकर देखा कि फरुर्खाबाद से ये डंफर गिट्टी खाली करके भिंड जा रहा था,जिसको चालक श्यामपाल पुत्र कायम सिंह निवासी मोहल्ला बेलमपुरी जसराना फिरोजाबाद चला रहा था चालक नशे में था चालक को नींद आ गयी जिससे डंफर नीचे चला गया वह तो गनीमत रही बिजली के पोल से टकरा गया बरना बड़ा हादसा हो सकता था बिजली पोल क्षतिग्रस्त होने से बिजली विभाग के लाइनमेन भी मौके पर पहुँच गए और नुकसान की सूचना जेई को दी,पुलिस ने चालक को हिरासत में लेकर उसका मेडिकल कराया है।इस टक्कर से कस्बे के कई मुहल्लों की बिजली गुल हो गई है

आगनबाड़ी केंद्रों की योजनाओं के द्वारा बच्चों का विकास संभव : जेपी पाल

अखंड भारत संदेश

किशनी। सोमवार को ईसीसीई अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा) कार्यक्रम के तहत एक दिवसीय कार्यशाला बेसिक शिक्षा के अध्यापक जिन्होंने स्कूल रेडिनस का प्रशिक्षण प्राप्त किया था उनकी संख्या 223 एवं आगनबाड़ी कार्यकत्री संख्या 208 विकास खंड स्तरीय कार्यशाला का आयोजन श्री राम सिंह महाविद्यालय में कराई गई।कार्यक्रम में एआरपी एवं नोडल संकुल शिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।खंड शिक्षा अधिकारी जेपी पाल के द्वारा विधिवत उद्घाटन के बाद पूरे समय प्रशिक्षण का अवलोकन किया गया तथा उनके द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित करके प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यशाला के बारे में जानकारी दी गई। निपुण भारत मिशन के तहत संचालित किए गए कार्यों की जानकारी दी गई। बाल विकास परियोजना अधिकारी सुमन सिंह के द्वारा आंगनबाड़ी केंद्रों में चल रहे विकास कार्यों के संबंध में अवगत कराया गया। कार्यशाला में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था के वीडियो प्रतिभागियों को प्रदर्शित किए गए एवं उनके मध्य टीएलएम निर्माण हेतु गतिविधियां संचालित की गई। मीटिंग में एआरपी शरद यादव के द्वारा बताया गया कि बेसिक शिक्षा विभाग और आंगनवाड़ी केंद्रों में संचालित सभी योजनाओं के द्वारा ही पूर्णरूपेण बालक का सर्वांगीण विकास संभव है इसलिए समन्वय स्थापित करते हुए कार्य करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन कवि श्री बलराम श्रीवास्तव के द्वारा किया गया इस अवसर पर एआरपी विनय कुमार अनीता यादव संकुल शिक्षक प्रदीप कुमार मनीष कुमार रामाशंकर अनिल कुमार संजीव कुमार राजेश राठौर सहित सभी नोडल संकुल शिक्षक मौजूद रहे।

शादी में गई विवाहिता बच्चे सहित हुई गायब

अखंड भारत संदेश

किशनी। घर से बच्चे के साथ शादी में शामिल होने गई विवाहिता गायब हो गई तलाश करने के बाद भी उसका पता नहीं चल सका। वहीं एक अन्य घटना में दवा लेने बाजार गई विवाहिता भी अचानक गायब हो गई परेशान पति ने थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

क्षेत्र के गांव कुमार निवासी जितेंद्र नाथ पुत्र विद्या नाथ ने बताया कि उसकी पत्नी पप्पी देवी बीते 24 नवंबर को घर से सुबह 10:00 बजे अपने 2 वर्षीय पुत्र के साथ मायके में शादी में शामिल होने गई थी लेकिन वह दूसरे दिन तक भी मायके में नहीं पहुंची तो उसने तलाश किया लेकिन उसका कुछ भी पता नहीं चल सका रिश्तेदारी में भी तलाश किया लेकिन उसके बच्चे और पप्पी का कुछ भी पता नहीं चला है। पुलिस मोबाइल लोकेशन के जरिए मां बेटे का पता लगाने का प्रयास कर रही है।वहीं एक अन्य घटना में यादव नगर कुसमरा निवासी शैलेंद्र यादव पुत्र श्री पाल ने बताया कि बीते 25 नवंबर को उसकी पत्नी गीता सुबह 11:00 बजे मैनपुरी दवा लेने के लिए गई थी देर रात तक जब वह वापस नहीं लौटी तो उसने उसकी तलाश की लेकिन उसका फोन बंद आया काफी तलाश के बाद भी गीता का पता नहीं चल सका है पुलिस मामले की जांच कर रही है।

भदोही में कपड़ा और खिलौना बैंक का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

भदोही। कलेक्ट्रेट मुख्यालय पर आज कपड़ा और खिलौना बैंक की शुरूआत की गई। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कपड़ा/खिलौना बैंक को कपड़ा डोनेट कर इसका औपचारिक उद्घाटन किया। उन्होंने इस पहल की तारीफ की, साथ ही जनपदवासियों से इस अभियान का हिस्सा बनकर गरीबों, जरूरतमंदों की मदद करने का भी आह्वान किया।

जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कहा की इस बैंक की स्थापना का उद्देश्य है कि यदि किसी के घर में कपड़े पुराने हो जाते हैं, छोटे बच्चों के कपड़े बड़े हो जाने पर छोटे हो जाते है, तो उन कपड़ों को डोनेट करने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि वे लोग अपने घरों के कपड़े एवं खिलौने ले आकर डोनेट कर सकें, जिसको हमारे अधिकारियों के माध्यम से जरूरत मंद व्यक्ति को इन कपड़ों या खिलौनों को दिया जा सके।

तीन दिन में दूसरी बार भाजपा ने सपा-बसपा को दिया झटका

पूर्व विधायक जगपाल सिंह समेत कई नेता पार्टी में शामिल

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, वैसे-वैसे नेताओं का पाला बदल तेज हो रहा है। भाजपा ने मंगलवार को एक बार फिर सपा-बसपा को झटका देते हुए कई नेताओं को पार्टी में शामिल किया है। इनमें सबसे बड़ा नाम चार बार के पूर्व विधायक बसपा नेता जगपाल सिंह का नाम शामिल है। भाजपा ने पूर्वांचल से लेकर पश्चिमी यूपी तक के कई नेताओं को पार्टी में शामिल किया है। पूर्वांचल के बलिया, मऊ, गाजीपुर से लगभग एक दर्जन नेताओं ने भाजपा की सदस्यता ली है। आठ बीएसपी नेताओं ने भाजपा का दामन थामा है। पूर्व विधायक जगपाल सिंह के अलावा बलिया के बसपा नेता छट्ठू प्रसाद, अजय कुमार, देवरिया के अमरेश कुमार सिंह, सपा नेता राना दिनेश प्रताप सिंह ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। इससे पहले रविवार को सपा सरकार में मंत्री रहे गाजीपुर के पूर्व मंत्री विजय मिश्रा सहित कई

नेताओं ने भाजपा का दामन थामा था। जो लोग भाजपा में शामिल हुए उनमें पूर्व मंत्री जय नारायण तिवारी सुल्तानपुर सपा से, मनोज दिवाकर बसपा नेता कानपुर से, जगदेव बसपा के पूर्व जिलाध्यक्ष, अशोक कुमार सिंह पूर्व आईएएस, राम शिरोमणि शुक्ला कांग्रेस के पूर्व विधायक, धर्मेंद्र पांडेय उन्नाव से बसपा नेता, मदन गौतम पूर्व विधायक ओरैया से बसपा से, कुंवर अभिमन्यु सिंह अयोध्या से समाजसेवी शामिल हुए थे।

बसपा का गढ़ कहे जाने वाले जनपद सहारनपुर में बसपा को झटके पर झटके लग रहे हैं। हरौड़ा (वर्तमान में सहारनपुर देहात) से तीन बार विधायक चुने गए जगपाल सिंह भाजपा में शामिल हो गए। हरौड़ा विधानसभा सीट से वर्ष 1997 का चुनाव जीतकर मायावती गठबंधन की सरकार में मुख्यमंत्री बनी थीं। सरकार गिर जाने के कारण जब मायावती ने इस सीट से इस्तीफा दिया तो उनके प्रतिनिधि के रूप में जगपाल सिंह पहली बार बसपा के टिकट पर उप चुनाव लड़कर विधायक निर्वाचित हुए थे। वर्ष 2002 में हुए चुनाव में भी इस सीट से बसपा सुप्रीमों मायावती चुनाव लड़ी और प्रदेश की मुख्यमंत्री बनी थी। मगर बाद में मायावती द्वारा इस्तीफा दिये जाने के कारण इस सीट पर वर्ष 2003 में हुए उपचुनाव में जगपाल सिंह फिर चुनाव लड़े मगर वह चुनाव हार गए थे। इसके बाद वर्ष 2007 और वर्ष 2012 में सामान्य हुई इस सीट पर लगातार जगपाल सिंह विधायक चुने गए। वर्ष 2017 में हुए चुनाव में जगपाल सिंह मामूली अंतर से कांग्रेस के मसूद अख्तर से चुनाव हार गए। इसके बाद से जिले में बसपा में लगातार उथल-पुथल मची है और एक-एक कर बसपा के कई बड़े नेता पार्टी छोड़ दूसरी पार्टियों में शामिल हो रहे हैं।

भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर अमित शाह बिताएंगे रात, बीएसएफ जवानों की करेंगे हौसला अफजाई

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 4 दिसंबर को राजस्थान में भारत-पाकिस्तान सीमा के पास एक रात बिताएंगे। गृह मंत्रालय के शीर्ष सूत्रों ने न्यूज एजेंसी एएनआई को बताया कि शाह 4 से 5 दिसंबर के बीच राजस्थान की अपनी दो दिवसीय यात्रा के दौरान बीएसएफ कर्मियों के साथ रहेंगे। गृह मंत्री चार दिसंबर को जैसलमेर जाएंगे और क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात बीएसएफ के जवानों से मुलाकात करेंगे। सूत्रों ने बताया कि गृह मंत्री चार दिसंबर को जैसलमेर पहुंचकर देश की पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा की समीक्षा करेंगे और बीएसएफ जवानों द्वारा की जा रही रात्रि गश्त पर करीब से नजर रखेंगे। वह क्षेत्र में एक सीमा चौकी पर बीएसएफ जवानों के साथ एक रात भी बिताएंगे। यह पहला मौका होगा जब गृह मंत्री सीमा के पास बीएसएफ जवानों के साथ रात बिताएंगे। बीएसएफ पहले अपना स्थापना दिवस दिल्ली में मनाती थी। 1 दिसंबर 1965 को स्थापित, इरक्ष भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश सीमाओं की रक्षा के लिए जिम्मेदार है।

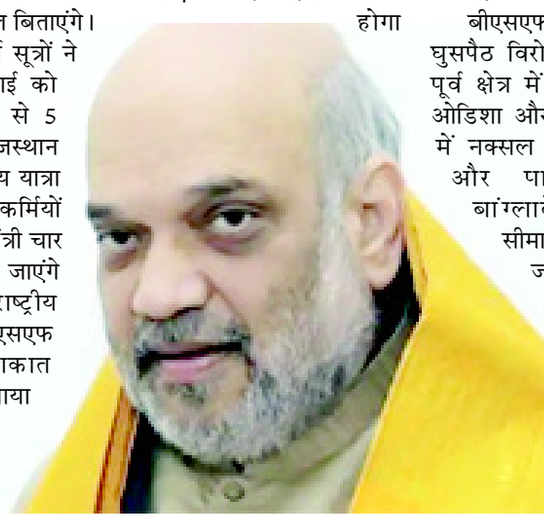

बीएसएफ कश्मीर घाटी में घुसपैठ विरोधी भूमिका, उत्तर पूर्व क्षेत्र में उग्रवाद विरोधी, ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्यों में नक्सल विरोधी अभियान और पाकिस्तान और बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा के साथ एकीकृत जांच चौकियों की सुरक्षा में भी भूमिका निभा रही है। अपने दो दिन के जयपुर दौरे में, गृह मंत्री के भारतीय जनता पार्टी की राज्य कार्य समिति और सांसदों, विधायकों, जिला प्रमुखों, पंचायत समिति के सदस्यों और प्रधानों सहित जनप्रतिनिधियों की बैठक की अध्यक्षता करने की उम्मीद है।

ओमिक्रॉन के खतरे के बीच कर्नाटक में लगने जा रहा लॉकडाउन? सीएम बोम्मई ने दिया यह जवाब

नई दिल्ली। कर्नाटक सरकार ने कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के खतरे को देखते हुए सोमवार को कहा कि वो लॉकडाउन के किसी भी प्रस्ताव पर विचार नहीं कर रही है। कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन को डेल्टा से भी खतरनाक माना जा रहा है। इस वैरिएंट की सबसे पहले बोत्सवाना में पुष्टि हुई थी। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका में भी इसके मामले सामने आए।

एक रिपोर्ट के मुताबिक राज्य के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा कि हमने स्कूलों और कॉलेजों में सख्त सावधानी बरतने का निर्देश दिया है न कि उन्हें बंद करने को कहा है। लॉकडाउन का कोई प्रस्ताव नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ओमिक्रॉन के बारे में घबराने की जरूरत नहीं है। मुख्यमंत्री ने राज्य के लोगों से अपील की कि वो कोविड गाइडलाइंस का कड़ाई से पालन करें। उन्होंने कहा कि जहां पर नए वैरिएंट के मामले

सामने आए हैं उन देशों से राज्य में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति की एयरपोर्ट पर ही टेस्ट की जा रही है। इसके साथ-साथ मुख्यमंत्री ने कहा कि केरल के उन छात्रों के लिए कोविड-19 नेगेटिव रिपोर्ट अनिवार कर दी गई है जो कर्नाटक में पढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे छात्रों से राज्य में कोविड-19 नेगेटिव रिपोर्ट आने के बाद सात दिन के बाद दूसरा कोविड-19 टेस्ट कराने का निर्देश दिया गया है। सीएम बोम्मई ने कहा कि कर्नाटक सरकार विशेषज्ञों और केंद्र सरकार के साथ लगातार विचार-विमर्श कर रही है और दिशानिदेर्शों के अनुसार सभी सावधानियां बरती जा रही है।

कंगना रनौत को मिल रही जान से मारने की धमकी, पुलिस ने दर्ज किया केस

शिमला। फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत ने लगातार मिल रही धमकियों पर हिमाचल प्रदेश पुलिस को शिकायत दर्ज की है। अपनी शिकायत में कंगना ने कहा है कि उन्हें जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज किया है। पुलिस अधीक्षक गुरुदेव शर्मा ने कहा कि अभिनेत्री को हालांकि वाई प्लस श्रेणी की सुरक्षा मिली हुई है लेकिन पुलिस सतर्क हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार, अभिनेत्री कंगना रनौत ने बुधवार सुबह इंस्टाग्राम पोस्ट में बताया है कि उन्होंने एक पोस्ट मुंबई आतंकी हमले शहीदों को याद करते हुए लिखी थी, जिसके बाद उन्हें बठिंडा के किसी व्यक्ति ने जान से मारने की धमकी दी है। कंगना ने स्वर्ण मंदिर में अपने परिजनों के साथ तस्वीर शेयर करते हुए पोस्ट में कहा, "मैंने एक पोस्ट में लिखा था कि गद्दारों को कभी माफ नहीं करना और न ही भूलना।

कोरोना के नए वेरिएंट से सतर्क यूपी में बढ़ेगी कोविड टीकाकरण की रफ्तार

लखनऊ। दक्षिण अफ्रीका समेत कुछ अन्य देशों में कोरोना के नए वेरिएंट से संक्रमित मरीजों मिलने से सतर्क उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में कोविड टीकाकरण की रफ्तार और तेज करने के निर्देश दिए हैं। कोविड टीकाकरण के मामले में देश भर में अव्वल घनी आबादी वाले उत्तर प्रदेश में चार करोड़ 95 लाख से अधिक लोगों ने टीके की दोनों खुराक प्राप्त कर ली है। सीएम योगी ने मंगलवार को कहा कि विश्व के अनेक देशों में नए वेरिएंट के संक्रमित मिलने की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में हमें बहुत सतर्कता-सावधानी की जरूरत है। दूसरे देशों और प्रदेशों से उत्तर प्रदेश आ रहे हर व्यक्ति की जांच जरूर की जाए। बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन व एयरपोर्ट पर अतिरिक्त सतर्कता बरतने की जरूरत है, बिना किसी की जांच किए उसे बाहर न आने दिया जाए। केंद्र सरकार की तरफ से गाइडलाइंस को प्रभावी रूप से

लागू किया जाए। कोरोना वायरस के नए वेरिएंट को लेकर शासन की ओर से जीनोम सिक्वेंसिंग की व्यवस्था करने के मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि लखनऊ के केजीएमयू, पीजीआई, गोरखपुर, झांसी, मेरठ में जल्द से जल्द जीनोम सिक्वेंसिंग की व्यवस्था की जाए। नगर विकास और ग्राम्य विकास विभाग प्रदेश में स्वच्छता और सेनिटाइजेशन की कार्यवाही को तेज करें। प्रदेश में निगरानी समितियों को सक्रिय करें, ताकि कोविड से संक्रमित व्यक्तियों की समय से पहचान हो जाए और उनका समय पर इलाज हो सके।

अपर मुख्य सचिव नवनीत सहगल ने बताया कि प्रदेश में चार करोड़ 95 लाख से अधिक लोगों को टीके की दोनों डोज देकर कोविड का सुरक्षा कवर प्रदान कर दिया गया है। 11 करोड़ 16 लाख लोगों ने टीके की पहली डोज प्राप्त कर ली है। यह संख्या टीकाकरण के लिए पात्र प्रदेश की कुल आबादी की लगभग 75.71 फीसदी से अधिक है। इस प्रकार प्रदेश में अब तक 16 करोड़ 11 लाख से अधिक कोविड वैक्सीन डोज लगाए जा चुके हैं। कोविड टेस्टिंग और टीकाकरण में उत्तर प्रदेश देश में शीर्ष स्थान पर है।

मोदी सरकार ने एमएसपी पैनल के लिए मांगे किसान नेताओं के नाम

4 दिसंबर को यूनियन की बैठक में होगा फैसला

नई दिल्ली। किसान नेता दर्शन पाल ने कहा कि एमएसपी और अन्य मुद्दों पर चर्चा के लिए एक समिति गठित करने के लिए केंद्र ने संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) से पांच नाम मांगे हैं। इसका फैसला किसान संघों की अंब्रेला बॉडी यानी एसकेएम अपनी 4 दिसंबर की बैठक में करेगी। यह कदम संसद के दोनों सदनों द्वारा तीन विवादास्पद कृषि कानूनों को निरस्त करने के लिए एक विधेयक पारित करने के एक दिन बाद आया है, जिसके खिलाफ किसान एक साल से विरोध कर रहे हैं।पाल ने एक न्यूज एजेंसी को बताया, आज, केंद्र ने एसकेएम से उस समिति के लिए पांच नाम मांगे हैं जो फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के मुद्दे पर विचार करेगी। हमने अभी तक नामों पर फैसला नहीं किया है। हम इसे 4 दिसंबर की बैठक में तय करेंगे।एसकेएम, 40 से अधिक फार्म यूनियनों की एक संयुक्त शाखा है, जो कि एमएसपी के लिए कानूनी

गारंटी सहित तीन कृषि कानूनों और उनकी अन्य मांगों के खिलाफ किसानों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहा है। इस महीने की शुरूआत में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पोषणा की थी कि शून्य बजट आधारित कृषि को बढ़ावा देने, देश की बदलती जरूरतों के अनुसार फसल पैटर्न बदलने और एमएसपी को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के विषयों पर निर्णय लेने के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/29506

क्या पुलिसवालों को बैंक लोन देने पर सरकार ने लगाई है रोक? वित्त मंत्री ने दिया यह जवाब

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि केंद्र ने बैंकों को पुलिस कर्मियों जैसे संवेदनशील ग्राहकों को ऋण नहीं देने के लिए कोई विशेष निर्देश नहीं जारी किया है।

वित्त मंत्री ने उच्च सदन में प्रश्नकाल के दौरान पूरक सवालों के जवाब में यह टिप्पणी की। मंगलवार को राज्यसभा में एक सवाल का जवाब देते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि बैंकों को कुछ श्रेणी के ग्राहकों को ऋण नहीं देने का निर्देश देने की कोई आधिकारिक नीति नहीं है। उन्होंने कहा, ₹बैंक केवाईसी और अन्य रेटिंग के आधार पर आकलन करते हैं। मैं नहीं समझती कि बैंकों को ऐसा कोई विशेष निर्देश दिया गया है कि कृपया इन लोगों को ऋण नहीं दें।" उन्होंने कहा कि बैंक अपने उपलब्ध केवाईसी (अपने ग्राहक को जानें) के आधार पर अपने विवेक से फैसला करते हैं।

सदन में वित्त राज्य मंत्री भागवत कराड ने कहा कि बैंकों

को पुलिस और नेताओं को ऋण देने में ₹समस्याएं₹ हैं। उन्होंने कहा कि बैंक ऐसे ग्राहकों को कर्ज देने से पहले उनका 'ट्रैक रिकॉर्ड' देखते हैं। वे राजनीति से जुड़े लोगों (पीईपी) को बैंकों द्वारा कथित तौर पर ऋण नहीं देने के बारे पूछे गए सवालों का जवाब दे रहे थे। कराड ने कहा कि आवास ऋण मुख्यतः बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) के रूप में पंजीकृत कुछ गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों (एनबीएफसी) के द्वारा दिए जाते हैं और इन संस्थाओं को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा विनियमित किया जाता है।

चीन की हरकतों पर भारत की पैनी निगाह, लद्दाख में तैनात किए 4 इजरायली ड्रोन

नई दिल्ली। चीन की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने के लिए भारतीय सेना ने अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इजरायल से 4 हेरॉन ड्रोन मंगाए हैं उन्हें लद्दाख सेक्टर में तैनात किए गए हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर चीन की विस्तारवाद कोशिशों के बाद भारत ने अप्रैल 2020 के बाद से अपने सैनिकों की तैनाती बढ़ा दी है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, शीर्ष सरकारी सूत्रों ने बताया कि निगरानी के लिए लद्दाख में एलएसी पर चार ड्रोन तैनात किए गए हैं। ये चारो नए ड्रोन वर्तमान में सबसे अधिक एडवांस हैं। सूत्रों ने कहा कि एडवांस ड्रोन की एंटी-जैमिंग क्षमता उनके पिछले संस्करणों की तुलना में काफी बेहतर है।

ओमिक्रॉन वैरिएंट के खतरे से निपटने का पुतिन ने बताया उपाय, पूरी दुनिया से की अपील

मॉस्को। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने मंगलवार को महामारी को रोकने में मदद करने के लिए कोरोना वायरस के खिलाफ टीकों की पारस्परिक मान्यता का आह्वान किया है। दुनिया भर में तेजी से फैलने वाले ओमिक्रॉन वेरिएंट के बारे में चिंता बढ़ रही है। वीडियो लिंक द्वारा एक रूसी निवेश मंच पर बोलते हुए, पुतिन ने कहा कि देश केवल अपने कार्यों का समन्वय करके कोरोना वायरस के खिलाफ प्रभावी रूप से लड़ाई लड़ सकते हैं।

रूसी राष्ट्रपति ने सम्मेलन में कहा, ₹मेरा मतलब टीकों और

टीकाकरण प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता, ग्रह के सभी क्षेत्रों के लिए टीकों की उपलब्धता और कोरोना वायरस के खिलाफ नई दवाओं पर संयुक्त कार्यों से है। उन्होंने कहा, ₹आने वाले हफ्तों में, यह स्पष्ट हो जाएगा कि नए स्ट्रेन के परिणाम कितने गंभीर हैं। लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि हमें वायरस में किसी भी बदलाव के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

अगस्त 2020 में रूस एक कोरोना वायरस वैक्सीन स्पुतनिक-वी बनाने वाला पहला देश था। इस वैक्सीन को दर्जनों देशों में उपयोग के लिए अनुमोदित किया गया है। हालांकि, इसे अभी तक विश्व स्वास्थ्य संगठन या यूरोपीय मेडिसिन एजेंसी द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया है। रूसी अधिकारियों द्वारा स्पुतनिक वी को बड़े पैमाने पर नैदानिक परीक्षणों से पहले पंजीकृत करने के बाद विशेषज्ञों ने एक फास्ट-ट्रैक प्रक्रिया पर चिंता व्यक्त की थी। लेकिन चिकित्सा पत्रिका द लैंसेट में एक लेख में इसे सुरक्षित और 90 प्रतिशत से अधिक प्रभावी घोषित किया गया था। रूस ने देश में उपयोग के लिए किसी भी विदेशी निर्मित टीके को मंजूरी नहीं दी है। ओमिक्रॉन ने देश और दुनिया की चिंता बढ़ा दी है। कहा जा रहा है कि मौजूदा टीके इस वेरिएंट को रोकने में सक्षम नहीं होंगे। अमेरिकी दवा कंपनी मॉडर्ना ने कहा है कि इसके लिए बूस्टर शॉट की आवश्यक्ता होगी।

तालिबान ने 100 से अधिक पूर्व पुलिस अधिकारियों को मार डाला या गायब कर दिया, रिपोर्ट में दावा

नई दिल्ली। तालिबान लड़ाकों ने अफगानिस्तान में सत्ता पर काबिज होने के बाद से 100 से अधिक पूर्व पुलिस और खुफिया अधिकारियों को या तो मार डाला है या जबरन "गायब" कर दिया है। ह्यूमन राइट्स वॉच ने मंगलवार को एक रिपोर्ट में यह बात कही। समूह ने आम माफी घोषित किये जाने के बावजूद अपदस्थ सरकार के सशस्त्र बलों के खिलाफ बदले की कार्रवाई जारी रखने की ओर इस रिपोर्ट में इशारा किया है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि तालिबान ने सरकारी रोजगार रिकॉर्ड का उपयोग करते हुए पूर्व अधिकारियों और उन लोगों को निशाना बनाया जिन्होंने आत्मसमर्पण किया था और सुरक्षा को लेकर पत्र प्राप्त किये थे। कुछ मामलों में, स्थानीय तालिबान कमांडरों ने लक्षित किए जाने वाले लोगों की सूची यह कहते हुए तैयार की है कि उन्होंने अक्षम्य कृत्य किए

हैं। ह्यूमन राइट्स वॉच ने रिपोर्ट में कहा, "हत्याओं के स्वरूप से पूरे अफगानिस्तान में आतंक उत्पन्न हो गया है, क्योंकि पूर्व सरकार से जुड़ा कोई भी व्यक्ति सुरक्षित महसूस नहीं कर सकता है।"तालिबान 15 अगस्त को अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज हुआ था जब इसके लड़ाके राजधानी काबुल में घुस गए थे। तालिबान देश की खराब अर्थव्यवस्था से निपटने के लिए तभी से जूझ कर रहा है और उसे इस्लामिक स्टेट समूह से आतंकवाद का भी सामना कर रहना पड़ रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि तालिबान ने पूर्वी नांगरहार प्रांत में ऐसे लोगों को निशाना बनाया है जिनके बारे में उसे संदेह है कि वे इस्लामिक स्टेट समूह का समर्थक हैं। यह प्रांत आईएस के हमलों का केंद्र है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि प्रांत की राजधानी जलालाबाद में मंगलवार को तब आठ घंटे तक भीषण गोलीबारी हुई जब तालिबान ने आईएस आतंकवादियों के एक संदिग्ध ठिकाने पर धावा बोल दिया।